ગુજરાત શૈક્ષણિક સંશોધન અને તાલીમ પરિષદ, ગાંધીનગરના પત્ર–ક્રમાંક
જીસીઈઆરટી/અભ્યાસક્રમ/માધ્યમ/૨૦૧૫/૬૪૧, તા. ૯-૧-૨૦૧૫–થી મંજૂર

हिन्दी

कक्षा ३

(प्रथम सत्र – द्वितीय सत्र)

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई–बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध
परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता–पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा
एवं हर एक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

विद्यार्थी का नाम : ____________________

पाठशाला का नाम : ____________________

वर्ग : __________ अनुक्रमांक : __________

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर १०-ए, गांधीनगर-३८२०१०

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक
मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय-सलाहकार
डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता

लेखन-संपादन
श्री विजय तिवारी (कन्वीनर)
डॉ. रेखा शर्मा
डॉ. रमणभाई प्रजापति
सुश्री केशा तिवारी

समीक्षा
डॉ. सुलतान अहमद पठान
डॉ. पारूल एम. दवे

चित्रांकन
श्री राजेश बारैया

संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-आयोजन
श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

NCF-2005 तथा RTE-2009 को केन्द्र में रखकर समग्र देश में प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या (Curriculam), पाठ्यक्रम (Syllabus), पाठ्यपुस्तकों (Textbooks) तथा समग्र शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव हो रहा है। यह बदलाव मुख्यत: संबंधित विषयवस्तु और शिक्षण प्रक्रिया की हमारी समझ के बारे में है। विद्यार्थी में सर्जनात्मकता, विचारने की शक्ति, तर्क तथा विश्लेषण कौशल विकसित हों, ताकि उसका सर्वांगीण विकास हो यही इस नई पाठ्यचर्या के मूल उद्देश्य हैं। इस अभिगम को केन्द्र में रखकर गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल द्वारा तैयार की गई **कक्षा ३ हिन्दी** विषय की यह पाठ्यपुस्तक छात्रों, अध्यापकों तथा अभिभावकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए पाठ्यपुस्तक मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है।

यह अपेक्षा है कि पाठ्यपुस्तक में दी गई प्रवृत्तियों द्वारा विद्यार्थी चर्चा, चिंतन एवं विश्लेषण करके अपने बौद्धिक स्तर को उन्नत करे तथा समूह कार्य करते हुए अपना वैयक्तिक विकास करे। साथ ही इसके अध्ययन-अध्यापन से विद्यार्थी को एक उत्तम नागरिक बनने की प्रेरणा मिले, उसका योग्य चरित्र-निर्माण हो और उसमें राष्ट्रप्रेम बढ़े। चतु:रंगी पाठ्यपुस्तक के उपयोग से इस प्रक्रिया को सहज एवं रोचक बनाने का प्रयास भी किया गया है।

आज ज्ञानार्जन के लिए अनेकविध आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं जिनसे शिक्षा की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। ऐसे में पाठ्यपुस्तक लक्ष्य न होकर एक दिशासूचक साधन मात्र है।

इस पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तायुक्त बनाने के लिए हमें विषय विशेषज्ञों तथा इस कक्षा में शिक्षणकार्य करनेवाले योग्य तथा अनुभवी शिक्षकों का सहयोग मिला है। उनके द्वारा तैयार की गई पांडुलिपि को प्रकाशित करने से पहले इस स्तर पर प्रत्यक्ष कार्य करनेवाले प्रबुद्ध शिक्षकों तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा इस पुस्तक की समीक्षा करवाई गई। उनके सुझावों के अनुरूप पांडुलिपि से आवश्यक परिवर्तन, परिवर्धन करके उसे अंतिम रूप दिया गया है।

यद्यपि हमने पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तायुक्त, विद्यार्थी भोग्य एवं क्षतिरहित बनाने के भरसक प्रयत्न किए हैं फिर भी शिक्षा में रुचि रखनेवाले शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्वज्जनों द्वारा इसकी गुणवत्ता में वृद्धि करने वाले सुझावों का पाठ्यपुस्तक मंडल सदैव हार्दिक स्वागत करता है।

पी. भारती (IAS)
नियामक
ता. 04-11-2019

कार्यवाह प्रमुख
गांधीनगर

प्रथम संस्करण : २०१५ पुन:मुद्रण : २०१६, २०१७, २०१८, २०१९, २०२०

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाळा पाठ्यपुस्तक मंडळ, 'विद्यायान', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर वती
पी. भारती, नियामक

मुद्रक :

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह* –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) अपने 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चे अथवा पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करे।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51–क

अनुक्रमणिका

प्रथम सत्र

क्रम	ईकाई	साहित्यकार		पृष्ठ संख्या
१.	आओ करें प्रणाम	प्रार्थना	संकलित	१
२.	चिड़ियाघर की सैर	चित्रवार्ता	संकलित	५
३.	सीख	काव्य	संकलित	१०
४.	शिक्षा-दीक्षा	कहानी	संकलित	१४
•	पुनरावर्तन — १	-	-	२०
५.	मुझको जरा बताओ ?	काव्य	संकलित	२३
६.	बिल्ले की पूँछ	कहानी	संकलित	२७
७.	होगा महका-महका देश	काव्य	संकलित	३७
८.	पुरस्कार	कहानी	संकलित	४२
९.	लोभी का अंत	कहानी	संकलित	५१
•	पुनरावर्तन — २	-	-	५८

द्वितीय सत्र

१०.	अम्माँ की रसोई में	काव्य	संकलित	६२
११.	बंदर और टोपीवाला	चित्रवार्ता	संकलित	६६
१२.	बरखा आई	गीत	रमेश मिलन	६९
१३.	गुरु की सेवा	कहानी	संकलित	७४
•	पुनरावर्तन — ३	-	-	८२
१४.	मम्मी	काव्य	संकलित	८६
१५.	प्यार भरा एक खत	पत्रलेखन	संकलित	९१
१६.	पहेलियाँ	काव्य	संकलित	९६
१७.	बुद्धि की सदा विजय	कहानी	ओम प्रकाश कश्यप	१०१
१८.	देखकर चलो भाई	संवाद	संकलित	१०८
•	पुनरावर्तन — ४	-	-	११३

पूरक वाचन

१.	बादल	-	प्रकाश मनु	११७
२.	बेवक्त का राग	-	संकलित	११९
३.	हम भारत की शान	-	संकलित	१२१
४.	रवीन्द्र की कलम से	-	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१२२

१ आओ करें प्रणाम

– संकलित

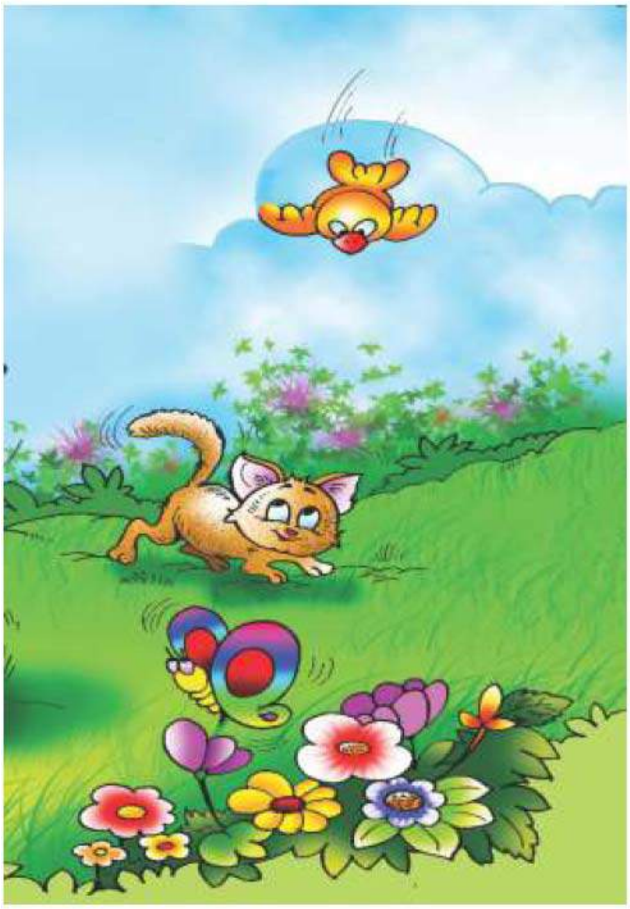

जिसने सुंदर धरा बनाई
रंग–बिरंगे फूल खिलाए,
जिसने सूरज, चाँद बनाए
मुसकानों के दीए जलाए।
सुंदर सागर, सुंदर नदियाँ
पर्वत खूब विशाल बनाए,

चींटी, हाथी, हिरन तितलियाँ
तरह–तरह के जीव बनाए।
आओ उसके गुण गाएँ हम
आओ उसको करें प्रणाम,
वही रचयिता इस दुनिया का
ईश्वर, अल्लाह उसका नाम।

शब्दार्थ

धरा पृथ्वी **सागर** समुद्र **पर्वत** पहाड़ **रचयिता** बनानेवाला **अल्लाह** खुदा, भगवान

अभ्यास

१. सुनिए और बोलिए :

रंग-बिरंगे, चाँद, सागर, विशाल, चींटी, ईश्वर

२. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) सुंदर धरा किसने बनाई है ?

(२) धरा पर खिलने वाले फूल कैसे हैं ?

(३) पृथ्वी पर बहनेवाली नदियाँ कैसी हैं ?

(४) ईश्वर ने पृथ्वी पर कैसे जीव बनाए ?

३. पढ़िए और समझिए :

मैं पढ़ता हूँ।	मैं पढ़ती हूँ।
तुम पढ़ते हो।	तुम पढ़ती हो।
वरुण पढ़ता है।	जूही पढ़ती है।
लड़का पढ़ता है।	लड़की पढ़ती है।
लड़के पढ़ते हैं।	लड़कियाँ पढ़ती हैं।
वे पढ़ते हैं।	वे पढ़ती हैं।

स्वाध्याय

१. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो :

क. सुंदर धरा किसने बनाई है?

....

ख. दुनिया के रचयिता का नाम क्या है?

....

२. एक जैसे अर्थवाले शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं।

दिए गए शब्दों के समान अर्थवाले शब्दों पर गोला करो।

पग	=	हाथ, (पैर)
धरा	=	पृथ्वी, पहाड़
सूरज	=	सूर्य, सितारा
दुनिया	=	देश, विश्व

३. पत्ता एक वचन है और पत्ते बहुवचन। ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों के सही बहुवचन रूप पर (✓) का निशान लगाओ।

केला	=	केले ☐	केलों ☐
नदी	=	नदीयाँ ☐	नदियाँ ☐
माला	=	मालाऔ ☐	मालाएँ ☐
खिलौना	=	खिलौनें ☐	खिलौने ☐

४. कविता को ध्यान से पढ़ो और खाली जगह भरो।

मुसकानों के .... जलाएँ

तरह तरह के .... बनाएँ

आओ उसके .... गाएँ हम

वही .... इस दुनिया का

५. दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही (✓) का निशान लगाओ।

क. संसार के रचयिता ने पर्वत कैसे बनाए ?

सुंदर ☐ विशाल ☐ पथरीले ☐

ख. दुनिया के रचयिता का नाम क्या है?

जादूगर ☐ रचनाकार ☐ ईश्वर ☐

६. सही जगह पर बिंदु (ं) या चन्द्रबिंदु (ँ) लगाकर शब्द बनाओ।

सुदर	चाद
नदिया	मुह
गाए	रग

योग्यता - विस्तार

- आओ, करें प्रणाम कविता को कंठस्थ करो।
- प्रकृति सम्बन्धित अन्य काव्य सुनाइए।
- प्राकृतिक तत्त्वों की उपयोगिता के बारे में बताइए।

२ चिड़ियाघर की सैर

कल गीता अपने दादा जी के साथ चिड़ियाघर गई थी। उसने देखा कि के पिंजरे के पास बहुत भीड़ थी। शेर गरजा तो सब डरकर पीछे हट गए। सामने लोग को और खिला रहे थे। दादा जी ने कहा – देखो, वह लिखा है – चिड़ियाघर के जानवरों को खाना देना मना है। गीता बोली, ''दादा जी ! वह देखिए काले मुँह का बंदर।'' दादा जी हँस पड़े और बोले, ''बिटिया वह है। लंगूर का मुँह काला होता है।'' एक जगह दिखाई दिया। गैंडे की नाक पर बड़ा-सा सींग था। साथ वाले बाड़े में लंबी गरदन वाला धीरे-धीरे टहल रहा था। गीता दादा जी को खींचते हुए आगे ले गई। वहाँ दो पैरों पर खड़ा था। एक तालाब में रंग-बिरंगी और तैर रही थीं। गीता ने दादा जी को दूसरी ओर इशारा करके दिखाते हुए कहा, ''दादा जी, दादा जी ! वह देखिए, पत्थर चल रहा है।'' दादा जी उसे समझाते हुए बोले-बिटिया, यह है। जब कछुए को डर लगता है तो यह अपनी गरदन और हाथ-पैर अपने खोल में छिपा लेता है। खोल इसका रक्षक है। गीता दौड़कर आगे गई। एक बड़े तालाब में तैर रहे थे। जैसे ही एक मगरमच्छ ने मुँह खोला, गीता ने डरकर दादाजी का हाथ पकड़ लिया। कुछ आगे बड़े-से पिंजरे में बहुत-सी थीं। गीता खुशी से नाच उठी और बोली-वह देखो हरियल ! दादा जी बोले, ''हाँ, यह तोता है। कुछ

चिड़ियाँ हमारे घर के पास भी दिखाई देती हैं जैसे ।" आगे बढ़ने पर नाचता हुआ दिखाई दिया। दादा जी ने गीता को बताया कि सबसे बड़ा पक्षी होता है। वह देखो शुतुरमुर्ग पेड़ की छाया में खड़ा है। चिड़ियाघर में और की सवारी भी कर सकते हैं। सामने का एक ठेला था। दादा जी ने अपनी टिकाई और गीता के लिए आइसक्रीम खरीदी। अब तक दोनों थक चुके थे। वे चिड़ीयाघर से बाहर आए। पकड़ी और अपने आ गए।

शब्दार्थ

चिड़ियाघर प्राणि-संग्रहालय **लंगूर** कलमुँहा बंदर **गैंडा** एक जंगली प्राणी **कछुआ** एक जलजन्तु, कूर्म **खोल** आवरण, गिलाफ **हरियल** तोता, हारिल **शुतुरमुर्ग** एक बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन लंबी होती है। **ठेला** लद्दू गाड़ी (बोझ ढोनेवाली गाड़ी)

अभ्यास

१. सुंदर अक्षरों में लिखिए :

(१) कल गीता अपने दादाजी के साथ चिड़ियाघर गई थी।

....

(२) चिड़ियाघर के जानवरों को खाना देना मना है।

....

(३) गैंडे की नाक पर बड़ा-सा सींग था।

....

(४) खोल इसका रक्षक है।

....

(५) यह देखो शुतुरमुर्ग पेड़ की छाया में खड़ा है।

....

२. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) गीता किस के साथ चिड़ियाघर गई थी ?

(२) सब लोग कब डरकर पीछे हट गए ?

(३) लंगूर का मुँह कैसा होता है ?

(४) लम्बी गरदनवाले प्राणी का नाम क्या है ?

(५) मगरमच्छ कहाँ तैर रहा था ?

स्वाध्याय

१. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(१) लोग बन्दर को क्या खिला रहे थे ?

....

(२) बन्दर के पिंजरे के पास क्या लिखा था ?

....

(३) दादा ने कछुए के बारे में गीता को क्या समझाया ?

....

(४) सबसे बड़ा पक्षी किसे माना जाता है ?

....

२. दिए गये शब्दों में से सही शब्द पर गोला करो :

पिजरा	पिंजरा	पींजरा
तालाब	तलाब	तालब
मघरमच्छ	मगरमच्छ	मगर्मछ
पथ्थर	पतथर	पत्थर

३. किसने, किससे कहा?

क. चिड़ियाघर के जानवरों को खाना देना मना है।

दादा ने गीता से ☐ गीता ने दादा से ☐

ख. खोल इसका रक्षक है।

गीता ने दादा से ☐ दादा ने गीता से ☐

४. सही शब्दों से मिलान करो :

(१)	काले मुँह का बन्दर	–	कछुआ
(२)	जहाँ विविध पशु-पक्षियों को देखने के लिए रखा जाता है	–	गैंड़ा
(३)	नाक पर बड़े सींग वाला प्राणी	–	जिराफ
(४)	डर लगने पर हाथ-पैर अपने खोल में छिपा लेता है	–	चिड़ियाघर
(५)	लंबी गरदनवाला प्राणी	–	लंगूर

५. इन शब्दों का प्रयोग करके छोटे-छोटे वाक्य बनाओ :

(१) लंगूर : ____________________

(२) रंग-बिरंगी : ____________________

(३) रक्षक : ____________________

(४) छाया : ____________________

६. **दिए गए प्रश्न के उत्तर में सही (✓) का निशान लगाओ :**

क. गीता अपने दादाजी के साथ कहाँ गई थी?

अस्पताल ☐ नाशिक ☐ चिड़ियाघर ☐

ख. लंगूर का मुँह कैसा होता है?

टेड़ा ☐ काला ☐ डरावना ☐

ग. दादाजी ने गीता के लिए क्या खरीदा?

स्वेटर ☐ खिलौना ☐ आइसक्रीम ☐

७. **बिल्ली बोलती है, म्याऊँ-म्याऊँ। तुम्हारे आसपास देखे जानेवाले पशु-पक्षियों की आवाजें कैसी होती हैं? सोचकर मिलान करो :**

चिड़िया	हिन-हिन
कौआ	भौं-भौं
बकरी	चूँ-चूँ
घोड़ा	टैं-टैं
तोता	चीं-चीं
चूहा	मैंऽ
कुत्ता	काँव-काँव

८. **खाली स्थान में का, की, के और को लिखो :**

(१) गीता अपने दादाजी ____ साथ चिड़ियाघर गई थी।

(२) उसने देखा कि शेर के पिंजरे ____ पास बहुत भीड़ थी।

(३) चिड़ियाघर के जानवरों ____ खाना देना मना है।

(४) लंगूर ____ मुँह काला होता है।

(५) गैंडे ____ नाक पर बड़ा सा सींग था।

(६) गीता ने ड़रकर दादाजी ____ हाथ पकड़ लिया।

(७) दादा ने गीता ____ लिए आइसक्रीम खरीदी।

३ सीख

– संकलित

सूरज सिखलाता है हमको
बड़े सवेरे उठना,
सिखलाती है हवा खुशी की,
लय में चलते रहना।

चाँद हमें सिखलाता–देना
जग को नया उजाला,
तारे कहते, गीत सुनाओ
झिलमिल मस्तीवाला।

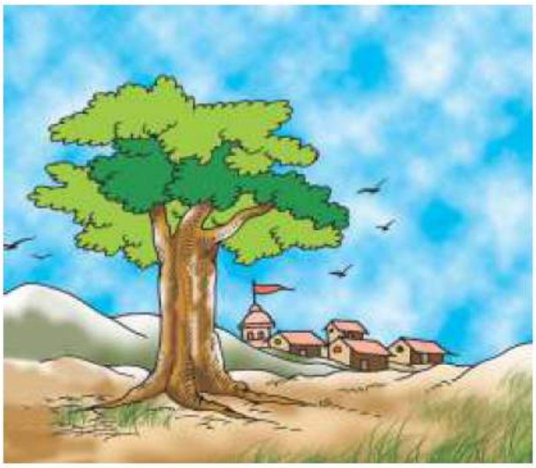

पेड़ हमें सिखलाता सारे दिन
मेहनत में तपना,
कोई चोट अगर दे, तो भी
फल से झोली भरना।

नदी बताती, कल–कल स्वर में
बहना मेरे भाई,
झरना बोला–पल–पल झरते
सबकी करो भलाई।

शब्दार्थ

लय समान उतार चढ़ाव की गति। **जग** दुनिया, संसार।

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) सूरज हमें क्या सिखलाता है?

(२) हवा हमें क्या सिखलाती है?

(३) जग को नया उजाला कौन देता है?

(४) नदी हमें क्या बताती है?

२. तीन-चार वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) 'सीख' कविता हमें क्या सिखाती है?

(२) 'सबकी करो भलाई' का क्या अर्थ है?

३. समझकर लिखिए :

(१) सूरज – सिखलाता।

(२) हवा – सिखलाती।

(३) चाँद – ______________।

(४) पेड़ – ______________।

(५) नदी – ______________।

४. निम्नलिखित वाक्यो में जो शब्द रेखांकित हैं उनके स्थान पर उनके अर्थवाला दूसरा शब्द लिखकर वाक्य फिर से लिखिए :

(१) सूरज सिखलाता है हमको,

बडे सवेरे उठना।

(२) चंदा हमें सिखलाता देना

जग को नया उजाला।

(३) नदी बताती, कल-कल स्वर में

बहना मेरे भाई।

स्वाध्याय

१. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(१) 'सीख' कविता में कौन क्या सिखाता है ? इसकी एक सूची बनाइए।

(२) मनुष्य के जीवन में प्रकृति के योगदान को शिक्षक से समझिए।

(३) सूरज, चाँद, हवा, तारे, पेड़, नदी, झरना आदि के जो प्राकृतिक गुण हैं, उन्हें क्रम से लिखिए।

२. निम्नलिखित खाली जगह भरकर पंक्ति पूरी कीजिए :

(१) सूरज ____________ है हमको

बड़े ____________ उठना।

(२) तो कहते ____________

झिलमिल ____________ वाला।

(३) नदी बताती ____________ स्वर में

बहना ____________ भाई।

३. निम्नलिखित शब्दों के विषय में एक-एक वाक्य लिखिए :

(१) खुशी ________________________________

(२) उजाला ________________________________

(३) मेहनत ________________________________

(४) झोली ____________________

(५) भलाई ____________________

४. समझकर नए वाक्य बनाओ :

चलते रहना। (चलना)

__________ रहना । (पढ़ाई)

__________ रहना । (खेलना)

__________ रहना । (खाना)

__________ रहना । (रोना)

४ शिक्षा-दीक्षा

- संकलित

एक दिन बालकों को वाटिका में धनुर्भ्यास करते देख महाराज दशरथ को उनकी शिक्षा-दीक्षा का ध्यान आया। उन्होंने उसी समय मंत्री सुमंत को बुलाकर कहा कि चारों राजकुमारों को शिक्षा-दीक्षा के लिए कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में छोड आओ। सुमंत ने आज्ञा शिरोधार्य की और जाकर राजकुमारों को महाराज की इच्छा से अवगत कराया। तब राम बोले 'हम पिताश्री की आज्ञा का पालन अवश्य करेंगे तात।'

''तो फिर अपनी माताओं से आज्ञा ले लें, हमें कल सुबह ही यहां से प्रस्थान करना है।'' ऐसा कहकर आर्य सुमंत वहां से चले गए।'

चारों भाई शाम ढले तीनों माताओं के पास पहुंचे और उन्हें पिताश्री की इच्छा से अवगत कराकर शिक्षा-दीक्षा के लिए जाने की अनुमति मांगी। पुत्रों के विछोह की बात सुनते ही तीनों माताएं उदास हो गईं। उन्हें लगा, मानो महाराज ने पुत्रों को आश्रम भेजने की बात कहकर उनके कलेजे से दिल निकालने की आज्ञा दे दी हो। किन्तु कुल की मर्यादा और बालकों के भविष्य को देखते हुए उन्हें शिक्षा-दीक्षा हेतु जाने की आज्ञा देनी ही पड़ी। ये क्षण तीनों माताओं पर बड़े कठिन गुजर रहे थे।

दूसरे दिन प्रातः माताओं एवं पिता ने बालकों को आशीर्वाद देकर मंत्री सुमंत के साथ कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम भेज दिया। साधारण वेशभूषा में चारों राजकुमार कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में आ गए। कुलगुरु ने अन्य शिक्षार्थियों की भांति नियम आदि बताकर चारों राजकुमारों को अपनी शरण में ले लिया।

चारों भाई गुरु आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करने लगे। वे गुरु की सेवा करने का कोई अवसर न चूकते थे। कुछ ही समय में चारों भाई वेद-वेदांतों में निपुण हो गए।

गुरु वसिष्ठ जो कुछ भी पढ़ाते, चारों भाई उसे दूसरे दिन ही कण्ठस्थ कर लेते। उन्होंने चारों राजकुमारों को वैदिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं राजधर्म, सेवकधर्म आदि की शिक्षा देकर पूर्ण नितिज्ञ एवं शिक्षित कर दिया।

तत्पश्चात एक बार सभी विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर गुरु वसिष्ठ ने राजा के पास सन्देश भिजवाया कि आपके चारों पुत्रों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी है, अब शस्त्र विद्या सिखलाने के लिए आप उन्हें आश्रम से बुलवा लें।

गुरु वसिष्ठ का सन्देश प्राप्त होते ही महाराज दशरथ और तीनों माताएं अपने पुत्रों को देखने एवं मिलने के लिए बेचैन हो उठीं। महाराज दशरथ ने उसी समय मंत्री सुमंत को बुलाकर कहा-"आर्य ! कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम से सन्देश आया है कि चारों राजकुमारों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी है। वे

चाहते हैं कि अब राजकुमारों को शस्त्र विद्या के लिए वहां से वापस बुला लिया जाए। अतः तुम द्रुतगति का रथ लेकर जाओ और चारों राजकुमारों को ले आओ। हमारी और उनकी माताओं की आंखें उन्हें देखने के लिए तरस रही हैं।''

''जो आज्ञा महाराज!'' कहकर सुमंत जाने लगे तो महाराज ने पुनः कहा- ''और हां, हम उन्हें राजसी वेश में देखना चाहेंगे।''

''मैं कुमारों के राजसी वस्त्रादि ले जाऊंगा महाराज।''

तत्पश्चात सुमंत ने माताओं से कुमारों के राजसी वस्त्राभूषण ले लिए और रथ द्वारा कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम की ओर चल दिए।

आर्य सुमंत ने कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम पर जाकर पहले उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया, उसके बाद अपने आने का प्रयोजन बताया। गुरु वसिष्ठ ने तत्काल ही चारों राजकुमारों को बुलाकर कहा- ''राम ! भरत ! लक्ष्मण और शुत्रघ्न !! तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हो चुकी है, इसलिए आर्य सुमंत तुम्हें वापस अयोध्या ले जाने आए हैं। जाओ, इनके लाए यह राजसी वस्त्र धारण कर प्रस्थान की तैयारी करो।''

''जो आज्ञा गुरुदेव !'' चारों भाइयों ने शीश नमाकर कहा और अपने-अपने वस्त्राभूषण लेकर अपनी कुटिया की ओर चल दिए।

कुलगुरु वसिष्ठ आर्य सुमंत से अयोध्या और महाराज के समाचार लेने लगे।

कुछ देर बाद जब चारों भाई राजसी पोशाकों में वहां पुनः उपस्थित हुए तो उनके तेज एवं कान्ति से दसों दिशाएं प्रकाशमान हो उठीं।

उनकी अनोखी छटा देखकर स्वयं आर्य सुमंत भी ठगे से रह गए।

चारों भाइयों ने गुरु चरणों में प्रणाम किया और दण्डवत् होकर उनके चरण छुए।

कुलगुरु वसिष्ठ ने स्नेहपूर्वक उन्हें उठाया और प्यार से उनके सिरों पर हाथ फिराकर बोले- ''जाओ वत्स ! ज्ञान का जो प्रकाश मेरे माध्यम से तुम्हें प्राप्त हुआ है, उससे दुनिया के अंधकार को दूर करो। माता-पिता और वरिष्ठ जनों की सेवा करना। सबसे प्रेम और दुखी जनों के दुख दूर करना। यही मेरी अंतिम शिक्षा और आशीर्वाद है।'

''हम आपकी आज्ञाओं का पालन करेंगे गुरुदेव!'' चारों कुमारों ने एक स्वर में कहा।

''तुम्हारा कल्याण हो, वत्स।''

तत्पश्चात, चारों भाइयों ने एक बार पुनः गुरु चरणों में प्रणाम किया, फिर अपने सहपाठियों से विदा लेकर आर्य सुमंत के साथ रथ पर सवार हो गए।

शब्दार्थ

प्रस्थान जाना **बिछोह** बिछड़ना, अलग होना **नीतिज्ञ** नीति से परिपूर्ण **द्रुतगति** तेज गति से चलनेवाला **वस्त्राभूषण** कपड़े और गहने **प्रयोजन** कारण **वत्स** पुत्र, बेटा **वरिष्ठ** वृद्ध, अधिक उमर वाले

मुहावरे

* कलेजे से दिल निकालना प्रिय वस्तु को अपने से दूर करना।
* आँखें तरसना देखने की तीव्र इच्छा होना
* ठगा-सा रह जाना आश्चर्य चकित हो जाना
* सिर पर हाथ फेरना प्यार जताना

अभ्यास

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) महाराज दशरथ को राजकुमारों की शिक्षा-दीक्षा का ध्यान कैसे आया ?
(२) माताएँ उदास क्यों हो गईं ?
(३) राजकुमार किनके साथ आश्रम गए ?
(४) सुमंत राजकुमारों को किनके आश्रम में ले गए ?
(५) आश्रम से लौटते समय महाराज राजकुमारों को किस वेश में देखना चाहते थे ?
(६) सुमंत क्या देखकर ठगे से रह गए ?

२. नीचे दिए गए शब्दों का उपयोग करके वाक्य बनाइए :

शिक्षा-दीक्षा : ______________________

कुलगुरु : ______________________

वेशभूषा : ______________________

आश्रम : ______________________

कुटिया : ______________________

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(१) राजा दशरथ के कितने पुत्र थे? कौन-कौन से ?

(२) माताओं ने राजकुमारों को जाने की आज्ञा क्यों दी ?

(३) चारों भाइयों ने किस प्रकार शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की ?

(४) गुरु वसिष्ठ ने राजा के पास क्या संदेश भिजवाया ?

(५) कुलगुरु वसिष्ठ ने राजकुमारों को बुलाकर क्या कहा ?

(६) कुलगुरु ने राजकुमारों के सिर पर हाथ फेरते हुए क्या कहा ?

२. नीचे दिए गए कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर खाली-जगह भरिए :

(प्रस्थान, वेद-वेदांतों, बिछोह, प्रकाशमान, सुमंत)

(१) पुत्रों के ____________ की बात सुनते ही तीनों माताएँ उदास हो गईं।

(२) कुछ ही समय में चारों भाई ____________ में निपुण हो गए।

(३) जाओ, इनके लाए यह राजसी वस्त्र धारण कर ____________ की तैयारी करो।

(४) कुलगुरु वसिष्ठ आर्य ____________ से अयोध्या और महाराज के समाचार लेने लगे।

(५) उनके तेज एवं कान्ति से दसों दिशाएँ ____________ हो उठीं।

३. नीचे दिए गए कथन किसने किससे कहें हैं बताइए :

(१) ''हम पिताश्री की आज्ञा का पालन अवश्य करेंगे, तात।''

(२) ''तुम द्रुतगति का रथ लेकर जाओ और चारों राजकुमारों को ले आओ।''

(३) ''और हाँ, हम उन्हें राजसी वेश में देखना चाहेंगे।''

(४) ''हम आपकी आज्ञाओं का पालन करेंगे गुरुदेव।''

(५) ''तुम्हारा कल्याण हो, वत्स।''

४. समानार्थी शब्द लिखिए :

माँ ____________	प्रणाम ____________
परीक्षा ____________	शीश ____________

राजा	__________	सुबह	__________
आँख	__________	शाम	__________

५. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

दिन ×	__________	आशीर्वाद ×	__________
इच्छा ×	__________	साधारण ×	__________
उदास ×	__________	प्रकाश ×	__________
कठिन ×	__________	ज्ञान ×	__________

६. नीचे दिए गए कोष्ठक में से रामायण के पात्रों के सात नाम ढूँढकर ◯ बनाइए :

प	र	ल	क्ष्म	ण	त	इ	ऋ	शी
ह	व	पी	बे	चे	थे	न	णि	द
ख	ल	ह	ठि	छु	से	श	ड	श
रा	ती	जु	नु	झ	आ	त्रु	ढ़	र
म	स	धू	दी	मा	उ	घ्न	ध	थ
त्र	क	सी	शू	ट	न	ल	फि	खी
झ	न	ता	णी	डे	र	ये	बु	मी

७. निम्नलिखित परिच्छेद का सुंदर अक्षरों में अनुलेखन कीजिए :

गुरु वसिष्ठ जो कुछ भी पढ़ाते, चारों भाई उसे दूसरे दिन ही कण्ठस्थ कर लेते। उन्होंने चारों राजकुमारों को वैदिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं राजधर्म, सेवकधर्म आदि की शिक्षा देकर पूर्ण नीतिज्ञ एवं शिक्षित कर दिया।

८. वर्तनी सुधारिए :

अनुमती	__________	कूलगुरु	__________
वसीष्ठ	__________	पोसाक	__________
आध्यात्मीक	__________	वाटीका	__________
कान्ती	__________	धर्नुभ्यास	__________

✻

पुनरावर्तन १

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) यह सुंदर धरा किसने बनाई है ?

(२) लंगूर का मुख कैसा है ?

(३) तारे हमें क्या सिखाते हैं ?

(४) सुमंत क्या देखकर ठगे से रह गए ?

२. दो या तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) हमें ईश्वर का गुणगान क्यों करना चाहिए ?

(२) पेड़ से हमें क्या सीख मिलती है ?

(३) चारों भाइयों ने कैसी शिक्षा ग्रहण की ?

(४) 'सबकी करो भलाई' का क्या अर्थ है ?

३. अनुलेखन कीजिए :

(१) चिड़ियाघर ____________ (२) पिंजरा ____________

(३) प्रणाम ____________ (४) मगरमच्छ ____________

(५) वस्त्राभूषण ____________ (६) आइसक्रीम ____________

(७) चाँद ____________ (८) द्रुतगति ____________

(९) प्रस्थान ____________ (१०) नीतिज्ञ ____________

४. (अ) समझकर लिखिए :

(१) इच्छा × ____________ (२) उदास × ____________

(३) ज्ञान × ____________ (४) प्रकाश × ____________

(५) स्वामी × ____________ (६) शिक्षित × ____________

४. (ब) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : धरा – पृथ्वी, धरती

(१) चाँद : ________, ________

(२) सूरज : ________, ________

(३) वृक्ष : ________, ________

(४) प्रकाश : ________, ________

(५) सुबह : ________, ________

(६) शाम : ________, ________

(७) आँख : ________, ________

४. (क) दिए गए शब्दों का उपयोग करके वाक्य बनाइए :

(१) प्रणाम : दीपक ने भगवान को प्रणाम किया।

(२) पेड़ :

(३) आश्रम :

(४) कुटिया :

(५) पिंजरा :

(६) रक्षक :

५. (अ) योग्य विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(१) कुछ ही समय में चारों भाई ________ में निपुण हो गए। (वेद-वेदांत, शिक्षा)

(२) ________ बताती, कल-कल स्वर में बहना मेरे भाई। (नदी, झरना)

(३) कोई ________ अगर दे, तो भी फल से झोली भरना। (प्रेम, चोट)

(४) यह सुंदर धरा ________ ने बनाई है। (ईश्वर, मनुष्य)

५. (ब) 'करमसद' शब्द के अक्षरों पर से यथासंभव अर्थपूर्ण शब्द बनाइए :

(१) क :

(२) र :

(३) म :

(४) स :

(५) द :

५. (क) दिए गए कोष्ठक पर से प्राणियों के नाम ढूँढकर लिखिए :

शे	प	गा	य	र	बं	य	बा	घ	* प्राणियों के नाम
ख	र	ल	बं	भें	म	द	च	र	(१) शेर
जि	र	ख	म	द	स	न	र	प	(२) ______
च	रा	गो	ह	र	र	म	हा	क	(३) ______
म	म	फ	श	त	र	द्यो	म	थी	(४) ______
कं	ग	च	ची	ता	भा	ट	डा	प	(५) ______
गा	र	म	सिं	प	ऊँ	लू	य	र	(६) ______
रू	म	क	था	मा	ट	ग	धा	म	(७) ______
प	च्छ	छ	र	न	ब	क	री	ह	(८) ______
									(९) ______ (१०) ______

५. (ड) उपर्युक्त शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

५ मुझको जरा बताओ ?

– संकलित

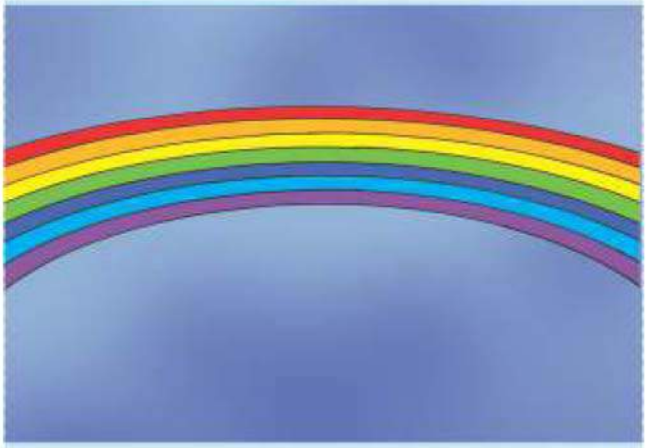

आसमान क्यों नीला लगता
तारों में क्या जादू जगता,
कैसे इंद्रधनुष उगता है
कहाँ छिपी परियों की रानी?
मुझको जरा बताओ नानी!

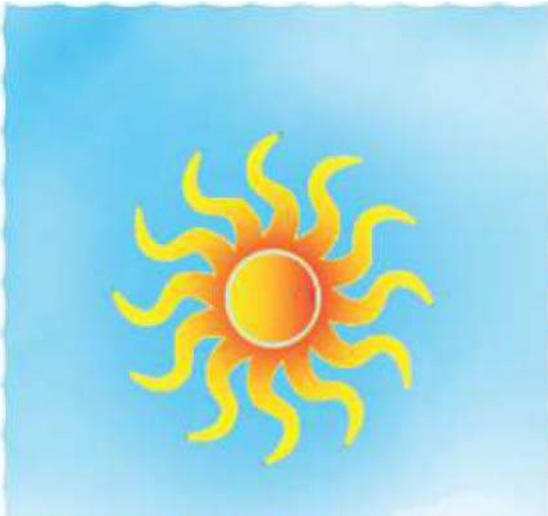

सूरज दिन भर चम-चम हँसता
किंतु शाम को क्यों यह ढलता,
नई रोशनी सबको देकर
कहाँ चला जाता यह मानी?
मुझको जरा बताओ नानी !

कैसे उगता चंदा प्यारा
बड़ा गजब इसका उजियारा,
चम्पे के चंचल फूलों-सी
क्यों इसकी है हँसी सुहानी ?
मुझको जरा बताओ नानी !

कैसे खिलते फूल सजीले
लाल-गुलाबी, नीले-पीले,
झूम-झूमकर मस्त हवा में
कहते हैं क्या एक कहानी ?
मुझको जरा बताओ नानी !

चिड़ियाँ गाती हैं जो गाना
लगता है क्यों खूब सुहाना,
कोयल क्यों अच्छी लगती है
कौआ क्यों इतना अभिमानी?
मुझको जरा बताओ नानी !

शब्दार्थ

गजब आश्चर्यजनक, विशिष्ट **चम्पा** लाल और पीले रंगो में खिलता एक फूल **अभिमानी** घमंडी, गर्वयुक्त **सुहाना** मन को आनंद देने वाला

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) तारों की क्या विशेषता है ?

(२) इन्द्रधनुष कहाँ उगता है ?

(३) चंदा की हँसी किसके जैसी है ?

(४) फूल हवा में झूम-झूमकर क्या करते हैं ?

२. निम्न शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :

(१) जादू – ________ (२) रानी – ________

(३) गजब – ________ (४) मस्त – ________

(५) सुहाना – ________

३. समझो और लिखो :

आसमान	×	जमीन	शाम	×	________
रोशनी	×	________	उजियारा	×	________
चंचल	×	________	खिलना	×	________
अच्छी	×	________			

४. चित्र बनाइए :

(१) आसमान में इंद्रधनुष।

(२) ढ़लता हुआ सूरज।

(३) खिले हुए फूल।

(४) कोयल और कौआ।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(१) आसमान कैसा लगता है ?

(२) बालक सारे सवाल किससे पूछता है ?

(३) सूरज किस समय ढ़लता है ?

(४) चिड़ियों का गाना कैसा लगता है ?

२. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्य में लिखिए :**

(१) सूरज और चाँद के विषय में कवि क्या कहता है ?

(२) चिड़िया, कोयल और कौआ इन तीनों में क्या समानता है और क्या असमानता है?

३. **निम्नलिखित शब्दों के सामने योग्य शब्द चुनकर लिखिए :**

(१) आसमान ______ । (पीला, नीला, काला)

(२) चंदा ______ । (न्यारा, प्यारा, सारा)

(३) हँसी ______ । (निराली, सुहानी, प्यारी)

(४) फूल ______ । (सजीले, मजीले, रसीले)

(५) हवा ______ । (ठंडी, मस्त, गरम)

४. **नीचे के शब्दों को उदाहरण के अनुसार लिखिए :**

(१) नानी - नाना - चाची ______

(२) दादी -   - मामी ______

५. ✳ कविता में कहानी के महत्त्व को समझिए।

✳ अपनी नानी-दादी से कहानी सुनाने को कहिए।

✳ बालक की बाल-सुलभ जिज्ञासा का महत्त्व समझिए।

✳ पर्यावरण और प्रकृति के महत्व को बालक समझ सके-ऐसा साहित्य आवश्यक है।

६ बिल्ले की पूंछ

– संकलित

एक पुराने बरगद के पेड़ पर ढेर सारी चिड़ियों ने बसेरा ले रखा था। उनमें आपस में बड़ा मेल था। वे सब सवेरा होते ही भोजन की तलाश में जंगल की ओर निकल पड़तीं और शाम होने पर लौटतीं। अपने बच्चों को वे उसी पेड़ पर रहने वाली एक बूढ़ी कबूतरी के भरोसे छोड़ जाती थीं। चिड़ियों के बच्चे अपनी कबूतरी दादी से बहुत हिले हुए थे। वे उसे गुटरगूं दादी कहते। गुटरगूं दादी प्यारी–प्यारी कहानियां सुनातीं। बच्चे खुशी के मारे अपनी नन्ही–नन्ही चोंच खोलकर चीं–चीं–चीं किया करते।

एक दिन जब दादी गुटरगूं कहानी सुना रही थीं तब म्याऊं बिल्ला उधर से गुजरा। कहानी सुनने के लालच में इतने सारे चीं–चीं भतीजों को देखकर वह लार टपकाते हुए पेड़ के नीचे रुक गया। वह कल शाम ही शहर से लौटा था। म्याऊं बिल्ला बड़ी चटोर तबीयत का था। हर वक्त दूसरे की दूध–मलाई पर उसकी नजर रहती थी।

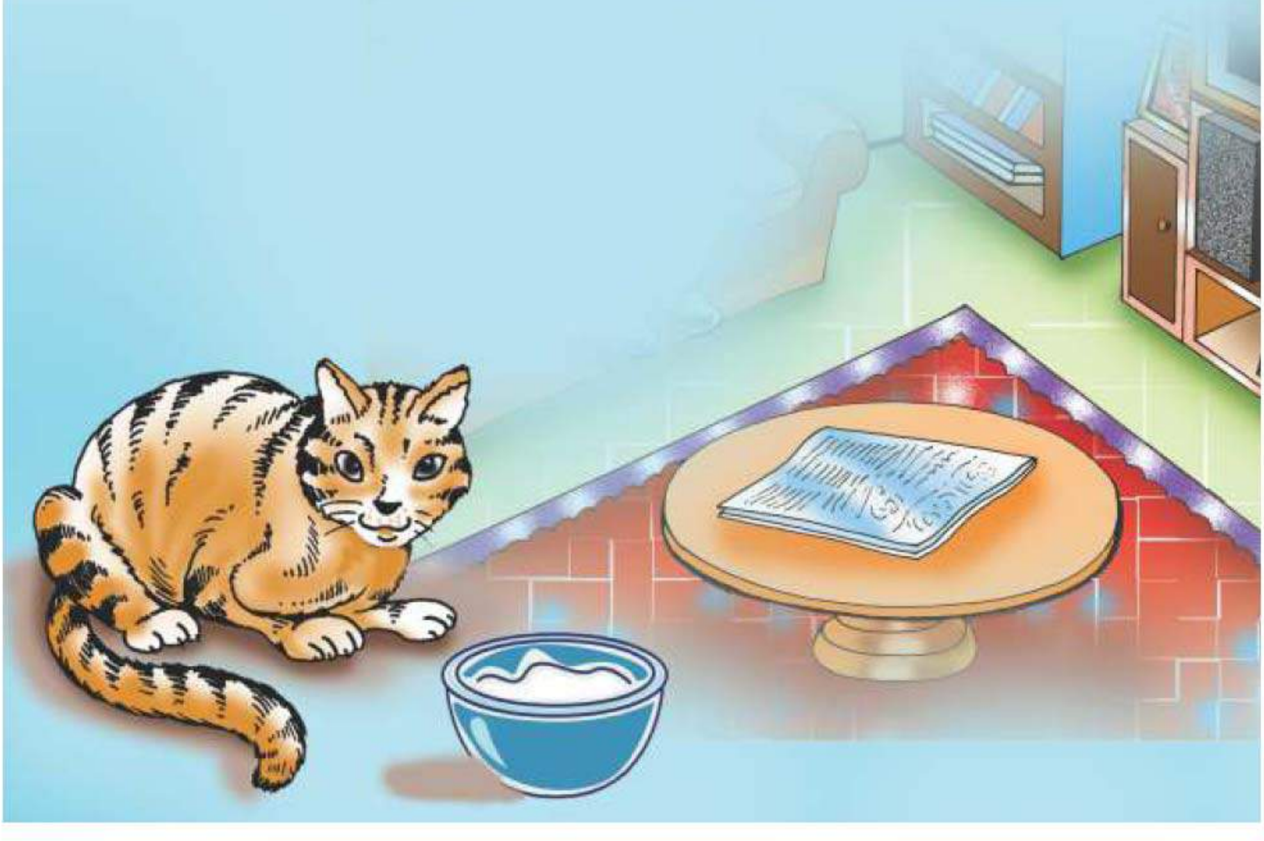

ऐसे ही एक दिन वह किसी की रसोई में दूध में मुंह डालते हुए पकड़ा गया था। घर की मालकिन ने चूल्हे की जलती लकड़ी खींचकर उसे मारी थी। म्याऊं बिल्ला ने काफी फुर्ती बरती थी, लेकिन हटते-हटते भी जलती हुई लकड़ी उसकी पूंछ पर आ गिरी थी। बेचारे म्याऊं की पूंछ बुरी तरह जल गई। वह सिकुड़कर थोड़ी छोटी भी हो गई। शहर में जो भी उसे देखता, उसकी जली हुई पूंछ को देखकर हंसने लगता। घबराकर म्याऊं बिल्ला अपनी बची हुई दुम दबाकर शहर से भाग आया।

जिस समय म्याऊं बिल्ला चोरी से दूध पी रहा था, उस समय रामू कौआ उस घर की मुंडेर पर बैठा हुआ था। उसने म्याऊं बिल्ले को दूध की चोरी न करने के लिए कहा भी था। मगर म्याऊं बिल्ले ने उसकी सलाह अनसुनी कर दी। रामू कौए ने जब उसकी फजीहत देखी, तो उस पर उसे तरस भी आया। मगर उसने सोचा, 'ठीक है, चोरी की सजा मिलनी ही चाहिए।' उस दिन जब वह शहर से लौटा तो म्याऊं बिल्ले की चोरी वाली बात उसने सभी चिड़ियों और जानवरों को बता दी।

म्याऊं बिल्ले को कौए की बातों की जानकारी नहीं थी। शहर से लौटकर जब वह अपनी बहादुरी की झूठी शेखी बघारने लगा, तो सभी हंसने लगे। मगर म्याऊं बिल्ला तो हद दर्जे का बेशर्म था। वह हमेशा की तरह सीना ताने घूमता रहा।

चिड़ियों के बच्चों को दादी गुटरगूं ने म्याऊं बिल्ले की चोरी की कहानी सुना दी थी। बच्चे उसे पहचानते भी थे। इसलिए जब उन्होंने म्याऊं बिल्ले को देखा तो वे सब मिलकर गाने लगे-

बिल्ले अंकल शहर गए,
शहर में पूंछ गंवा आए।
अंकल खाते घास-पात,
पूंछ खाती दूध-भात॥

म्याऊं बिल्ले ने गुर्राकर कहा, ''भतीजो, यह नया फैशन है। सैलून में जाकर पूंछ के बालों की कटिंग करवा आया हूं। अब पूंछ इतनी हल्की हो गई है कि तुम्हें क्या बताऊं?''

बुलबुल छेड़ते हुए बोली,''अंकल जी, इसे कसकर पकड़े रहना। कहीं आंधी में यह उड़ न जाए।''

दादी गुटरगूं बोली, ''अरे बिल्ले, कभी तो सच बोला कर। चोरी करना और झूठ बोलना दोनों ही बुरी बातें हैं।''

म्याऊं बिल्ला बोला, ''लो दादी, तुम भी खूब हो। किसने चोरी की और किसने झूठ कहा? तुम क्या किसी और के बारे में कह रही हो, दादी ?''

नन्हे बच्चे ताली बजाकर गाने लगे–

बिल्ले अंकल शहर गए,
वहां चुराई दूध मलाई।
पकड़े गए जब धोखे में,
तब पूंछ–कटिंग कराई॥

गुस्से से म्याऊं बिल्ले की मूछें फड़कने लगीं। बोला, ''दादी गुटरगूं, अभी तो जा रहा हूं। मगर याद रखना, इन शैतान भतीजों से एक बार जरूर निपटूंगा।''

यह कहकर वह वहां से भाग खड़ा हुआ।

म्याऊं बिल्ले को भागते हुए देखकर सारे बच्चे ताली बजाकर हंसने लगे। नन्हा मिट्ठू बोला, ''दादी, म्याऊं अंकल भाग गए।''

दादी गुटरगूं बोलीं, ''हां, मगर तुम लोग अभी छोटे हो। अपने से बड़ों को चिढ़ाना नहीं चाहिए। उनकी इज्जत करनी चाहिए।''

मीनू कोयल बोली, ''दादी, बड़े होकर हम लोग भी शहर जाएंगे।''

दादी गुटरगूं बोलीं, ''अरे, तुम लोग आजाद परिंदे। भला शहर क्यों जाओगे ? वहां तो सुन्दर सुन्दर चिड़ियां पिंजड़े में कैद कर ली जाती हैं। क्या, तुम लोग भी पिंजड़े में बंद होना चाहती हो ?''

नन्ही चिड़ियां भय से सिहर उठीं।

बुलबुल बोली, ''मगर दादी, लोग दूसरों को कैद क्यों करते हैं?''

''अपनी खुशी के लिए।''

सभी बच्चे एक साथ चकित होकर बोले, ''अपनी खुशी के लिए लोग दूसरों को दुख पहुंचाते हैं ? यह गंदी बात है न दादी।''

''बहुत गंदी बात है।'' गुटरगूं दादी बोलीं।

नन्हा तोता गुनगुनाने लगा–

''हमें हमारा जंगल प्यारा,
हम जंगल के वासी।
हमें नहीं है वैर किसी से,
हम सच्चे वनवासी॥''

सभी चिड़िया एक साथ गा उठीं–

''हमें हमारा जंगल प्यारा,
हम जंगल के वासी हैं।''

शाम को जब चिड़ियां दाना–पानी लेकर लौटीं तो बच्चों ने उनको दिन में दादी से सुनी इंसानों की बातें बताई।

यह सुनकर मम्मी–पापा चिड़ियां बोलीं, ''हां बच्चो, दादी ठीक कहती हैं। आदमी सिर्फ जानवरों को ही तकलीफ नहीं देते, बल्कि वे अपने मतलब के लिए पेड़–पौधों तक को नुकसान पहुंचाने से बाज नहीं आते। बच्चो, वही तो हमारे जंगलों को बड़ी तेजी से खत्म कर रहे हैं।''

''तो क्या वे लोग यहां के सभी जंगलों में पहुंच गए हैं?''

''हां बेटे।''

''तो फिर, अब तुम लोगों को जंगल कहां मिलेगा? तब भोजन जुटाने के लिए तुम्हें शहर जाना पड़ेगा, जहां खूबसूरत चिड़ियों के लिए पिंजड़े बने हैं।''

बड़ी चिड़ियों ने समझाया, ''चिंता मत करो बेटे। अब तो सो जाओ।''

इसके बावजूद कुछ बच्चों को नींद नहीं आई। वे देर तक जंगल और आदमियों के बारे में सोचते रहे। फिर न जाने कब सो गए। अचानक रात में भयंकर तूफान आया। दादी गुटरगूं के सुझाव पर सबने जंगल से थोड़ी दूर पर बनी एक खाली पुरानी हवेली में बसेरा ले लिया।

चिड़ियों की कचर–कचर से हवेली गूंज उठी। शोर सुनकर हवेली में रहने वाले चूहे चौंक पड़े। घबराहट के कारण उनमें भगदड़ मच गई।

चूहों को इस तरह परेशान देखकर दादी गुटरगूं बोलीं, ''भैया, घबराने की बात नहीं। हम लोग तो तूफान के डर से यहां रात बिताने आए हैं। तुम्हें बिलकुल नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। तुम लोग निडर घूमो-फिरो।''

चूहों ने चैन की सांस ली और सोने के लिए अपने-अपने बिलों में चले गए।

बाहर चलने वाले तूफान का शोर हवेली के अंदर भी सुनाई दे रहा था, आसमान में बिजली चमक रही थी। काफी पेड़ गिर चुके थे। किसी तरह से रात बीती।

सुबह होने पर चिड़ियां बाहर निकलकर थोड़ी देर बाद लौटकर बोलीं, ''दादी गुटरगूं। तूफान ने हमारे सारे घोंसलों को उजाड़ दिया है। जब तक हम नये घोंसले नहीं बना लेते, हमें इसी हवेली में रहना पड़ेगा।''

दादी गुटरगूं ने सिर हिला दिया।

चिड़ियां रोज की तरह जंगल की ओर निकल गईं। उनके बच्चे इतनी बड़ी हवेली पाकर उछलने और शोर मचाने लगे।

दादी गुटरगूं बोलीं, ''शैतानो। यहां पर चुपचाप खेलो जब यहां पर चूहे इतने हैं तो, बिल्लियां भी जरूर होंगी। सावधान नहीं रहोगे तो बिल्लियां तुम्हें भी खा जाएंगी।''

बच्चों ने सुन लिया। वे थोड़ी देर तक चुपचाप बैठे रहे, मगर उनमें इतना धीरज कहां था ? थोड़ी देर बाद वे फिर चिकिर-मिकिर करने लगे। कुछ एक ने नीचे उतरकर नन्हे चूहों से दोस्ती कर ली। उनसे वे आंख-मिचोनी खेलने लगे। दादी उन्हें सावधान कर रही थीं। मगर उस हुड़दंग में कौन सुनने वाला था।

दादी का कहना गलत नहीं था। म्याऊं बिल्ला अक्सर अपने दोस्तों के साथ वहां शिकार के लिए घूमा करता था। उस दिन भी वह दबे पांव वहां पर शिकार के लिए आ रहा था। नन्ही-मुन्नी चिड़ियों को चूहों के बच्चों से खेलते देखकर उसकी बांछें खिल गईं। उसने मन ही मन सोचा, आज शैतान भतीजों से बदला लेने का अच्छा मौका हाथ लगा है। अब देखता हूं, दादी गुटरगूं इन्हें मेरे चंगुल से कैसे बचाती हैं।

मन ही मन यह सोचकर वह चुपचाप आगे बढ़ा। तभी दादी गुटरगूं की तेज निगाह उस पर पड़ी। वह चिल्लाने लगीं, ''भागो बच्चो, म्याऊं बिल्ला घात लगाए बैठा है।''

सुनते ही सब अपने-अपने ठिकानों की ओर भागे, मगर म्याऊं बिल्ले ने फुर्ती से लपककर मुन्नी गोरैया को अपने पंजों में जकड़ ही लिया।

मुन्नी गौरैया को म्याऊं बिल्ले के पंजे में छटपटाते देखकर भागती हुई नन्ही चिड़िया रुक गईं और वे सब पलटकर म्याऊं बिल्ले पर तेजी से झपट पड़ी। वे सभी अपनी चोंच और नाखूनों से उसे नोंचने-खसोटने लगीं। म्याऊं बिल्ले के लिए वहां से भागना मुश्किल हो गया। मिट्ठू तोता बड़ा पाजी था। वह म्याऊं बिल्ले के कान में मुंह डालकर सीटियां बजाने लगा। म्याऊं बिल्ले का सिर झनझना उठा। उसने घबराकर मुन्नी गौरैया को छोड़ दिया और कान पकड़कर खड़ा हो गया। उसकी छितराई हुई मूछें दर्द के कारण कांप रही थीं। उसकी कटी हुई दुम बड़ी तेजी से हिल रही थी। उसको इस हालत में देखकर घबराई हुई गुटरगूं दादी की भी हंसी छूट गई। फिर वे बोलीं, ''बच्चो, इस बार अपने बिल्ले अंकल को माफ कर दो।''

चिड़ियों के बच्चों ने गुटरगूं दादी का कहना मान लिया। उन्होंने उसे छोड़ दिया।

मिट्ठू तोते ने म्याऊं बिल्ले के सामने मटकते हुए कहा, ''बिल्ले अंकल। मुन्नी गौरैया को छोड़ने के लिए वेरी-वेरी थैंक्स।''

म्याऊं बिल्ले ने अपनी गुस्से भरी नीली आंखों से उसे देखा। फिर कराहते हुए कहा, ''मैन्शन नॉट।''

शब्दार्थ

बसेरा ठहरने की जगह **तलाश** खोज **म्याऊं बिल्ला** नरबिल्ली बिलार **चटोर** स्वाद लोलुप **दुम** पूंछ **मुंडेर** छत **फजीहत** बुराहाल **शेखी** घमंड **बेशर्म** निर्लज्ज **गवाना** खो देना **बुलबुल** छोटी चिड़िया **शैतान** शरारती **परिंदा** चिड़िया **खूबसूरत** सुंदर **उजाड़ना** नष्ट कर देना **हुड़दंग** उपद्रवी, उछल कूद **दबे पाँव** आहिस्ता **निगाह** दृष्टि **खसोटना** छीनना **पाजी** शरारती **अंकल** चाचा

मुहावरे

- दुम दबाकर भागना – तेजी से भागना
- तरस आना – दया आना
- सीना ताने घूमना – घमंड से घूमना
- सिहर उठना – भयभीत हो जाना
- बाँछें खिल उठना – प्रसन्न हो जाना

अभ्यास

१. स्वच्छ और सुन्दर अक्षरों में लिखिए

बरगद	– ________	कहानियाँ	– ________	मालकिन	– ________
फजीहत	– ________	घोंसला	– ________	सैलून	– ________
बताऊं	– ________	चिढ़ाना	– ________	तकलीफ	– ________
गौरैया	– ________				

२. पढ़िए और समझिए :

कहानी	×	कहानियाँ	भतीजा	×	भतीजे
कौआ	×	कौवे	मूछ	×	मूछें
चूहा	×	चूहे	बच्चा	×	बच्चे

३. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) बरगद का पेड़ कैसा था ?

(२) घर की मालकिन ने बिल्ले को क्या मारा था ?

(३) म्याऊं बिल्ला कैसे घूमता था ?

(४) नन्हा तोता क्या गुनगुनाने लगा ?

(५) मिट्ठू तोते ने म्याऊं बिल्ले के सामने मटकते हुए क्या कहा ?

स्वाध्याय

१. दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(क) चिड़ियों के बच्चे कबूतरी दादी को क्या कहकर पुकारते थे ?

________ ________ ________ ________ ________

(ख) गुटरगूं दादी किसे कहानियाँ सुनाती थी ?

________ ________ ________ ________ ________

(ग) दादी गुटरगूं ने चोरी और झूठ के बारे में बिल्ले से क्या कहा ?

(घ) सभी चिड़ियां एक साथ क्या गा उठीं?

२. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(१) म्याऊं बिल्ला अपनी बची हुई दुम दबाकर शहर से क्यों भाग आया?

(२) रामू कौवे ने चिड़ियां को म्याऊं बिल्ले की कौन-सी बात बता दी ?

(३) म्याऊं बिल्ले ने गुर्राकर अपनी पूँछ के बारे में क्या बताया?

(४) मम्मी-पप्पा चिड़ियों ने बच्चों से आदमी के बारे में क्या कहा?

(५) मुन्नी गौरेया को चिड़ियों ने बिल्ले के पंजों से कैसे छुडाया?

३. पढ़ो, समझो और मिलान करो :

मुन्ना	भतीजी
बिल्ला	दादी
भतीजा	आंटी
दादा	बिल्ली
अंकल	मुन्नी

४. उचित समान अर्थवाले शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ :

दिन	☐ गरीब	☐ दिवस
जंगल	☐ वन	☐ जंगली
वक्त	☐ घड़ी	☐ समय
सजा	☐ दंड	☐ कारावास
बेशर्म	☐ घमंडी	☐ निर्लज्ज

५. दिए गए शब्दों में से सही शब्द पर (✓) और गलत शब्द पर (✘) का निशान लगाओ :

चौंच ☐	चोंच ☐	चोच ☐
बहादुरी ☐	बहादूरी ☐	बहादूरि ☐
जूठ ☐	झुठ ☐	झूठ ☐
नुकसान ☐	नूकसान ☐	नुकशान ☐

६. दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही (✓) का निशान लगाओ :

(क) पुराने बरगद के पेड़ पर किसने बसेरा ले रखा था?

☐ कबूतरों ने ☐ कौवों ने ☐ चिड़ियों ने

(ख) कहाँ जाकर म्याऊं बिल्ले ने पूंछ के बालों की कटिंग करवाई?

☐ शहर ☐ सैलून ☐ गाँव

(ग) मीनू कोयल बड़ी होकर कहाँ जाना चाहती है?

☐ गिरनार ☐ ससुराल ☐ गाँव के खेतों में

७. पाठ के अनुसार वाक्यों का सही क्रम लिखो :

(१) लोग दूसरों को कैद क्यों करते हैं। ☐

(२) चिड़ियां रोज की तरह जंगल की ओर निकल गई। ☐

(३) मुन्नी गौरेया को छोड़ने के लिए वेरी-वेरी थैंक्स। ☐

(४) वे उसे गुटरगूं दादी कहते। ☐

(५) चोरी की सजा मिलनी चाहिए। ☐

८. मुहावरों के अर्थ देकर सरल वाक्य में प्रयोग करो :

(१) तरस आना ____________________

____

(२) बाँछें खिल उठना ____________________

____

९. 'अंकल' अंग्रेजी शब्द है। पठित कहानी में से ऐसे दूसरे अंग्रेजी शब्दों को ढूँढकर लिखो :

(१) __________ (२) __________

(३) __________ (४) __________

✳

७ होगा महका-महका देश

- संकलित

जब सब बच्चे अच्छे होंगे
होगा अच्छा अपना देश,
जब सब बच्चे सच्चे होंगे
होगा सच्चा अपना देश।
एक चमक लेकर आँखों में
नन्हे-नन्हे कदम बढ़ेंगे,
जहाँ जाएँगे उत्सव होगा
जहाँ जाएँगे फूल खिलेंगे।
सभी पढ़ेंगे, सभी लिखेंगे
लेकर उजले, प्यारे बस्ते,
फूलों जैसी सरस किताबें
बस्ते होंगे वे गुलदस्ते।
महके हुए गुलाबों जैसा
होगा महका-महका देश,
पर दुश्मन की खातिर तब भी
होगा दहका-दहका देश !
आओ हाथ बढ़ाएँ इतना
रहे यहाँ कुछ ओर न छोर,
आओ हाथ बढ़ाकर छू लें
किरणों की वह चंचल डोर।
नटखट-नटखट दिन हों अपने
गाने वाली हो हर भोर,

शब्दार्थ

सच्चे ईमानदार **नन्हे** छोटे **उत्सव** त्योहार **उजले** स्वच्छ, सफेद **सरस** सुंदर **गुलदस्ता** फूलों का गुच्छा **महक** सुगंध **छूना** स्पर्श करना **भोर** सबेरा **दुश्मन** शत्रु **डोर** धागा **किताब** पुस्तक **बस्ता** पुस्तक रखने हेतु उपयोग में लिया जानेवाला झोला।

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) अपना देश कब अच्छा बनेगा?

(२) नन्हें कदम जहाँ जाएँगे वहाँ क्या होगा?

(३) देश किसकी महक से महकेगा?

(४) दुश्मनों के लिए हमारा देश कैसा होगा?

२. (अ) समझिए और लिखिए :

(१) सच्चा – ईमानदार, सच बोलनेवाला

(२) महका –

(३) उजले –

(४) दुश्मन –

(५) उत्सव –

२. (ब) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : अच्छा × खराब

(१) देश ×

(२) सच्चा ×

(३) छोटा ×

(४) आना ×

(५) दिन ×

२. (क) काव्य में से ढूंढकर लिखिए :

उदाहरण : नन्ने-नन्हे = कदम

(१) महका-महका = ________ (२) प्यारे-प्यारे = ________

(३) सरस-सरस = ________ (४) नटखट-नटखट = ________

(५) दहका-दहका = ________

स्वाध्याय

१. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(दुश्मन, सच्चे, पढ़ेगे, लिखेगें, फूलों, चमक, गुलदस्ते)

(१) जब सब बच्चे ______ होगें, होगा सच्चा अपना देश।

(२) एक ______ लेकर आंखों में, नन्हे नन्हे कदम बढ़ेगें।

(३) सभी ______ सभी ______ लेकर ______ प्यारे बस्ते।

(४) ______ जैसी सरस किताबें होंगी।

(५) ______ की खातिर तब भी होगा दहका-दहका देश।

२. दो या तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) देश की उन्नति का आधार किस पर है?

(२) बस्ते गुलदस्ते कब बन जाऐंगे ?

(३) दुश्मनों के लिए हमारा देश कैसा होगा?

(४) हमें आपस में किस प्रकार रहना चाहिए?

(५) इस कविता से क्या सीख मिलती है?

३. काव्य 'पंक्तियाँ' पूर्ण कीजिए :

(१) सभी पढ़ेंगे ______________________ वे गुलदस्ते।

(२) आओ हाथ ______________________ चंचल डोर।

४. (अ) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : (१) आसमान : आसमान में लाली छाई है।

= आकाश में लाली छाई है।

(२) नन्हे-नन्हे : नन्हे-नन्हे कदम बढ़ेगें।

=

(३) उजले : बस्ते उजले हैं।

=

(४) महक : गुलाबों की महक से देश महकेगा।

=

(५) शान : बच्चे देश की शान हैं।

=

४. (ब) अंगों को काम से मिलाइए :

(१)	कान	-	☐	फिल्म देखते हैं।
(२)	आँख	-	☐	गाना सुनते हैं।
(३)	नाक	-	☐	गाना गाते हैं।
(४)	पैर	-	☐	फूल सूंघते हैं।
(५)	हाथ	-	☐	चलते हैं।
(६)	मुँह	-	☐	बल्ला घुमाते हैं।

४. (क) इकाई में आए हुए शब्द एवं महापुरुषों के नाम ढूंढ़िए एवं लिखिए :

गु	ता	ख	ज	म	माँ	ट	य	गु
न	ला	प	ल	वा	य	धी	र	ल
प	ल	ब	भ	व	ह	श	जी	द
न	भा	र	त	ग	क	ला	ग	स्ते
ट	म	ह	का	स	त	घ	ल	च
ख	छ	ज	ट	ठ	र	सिं		ने
ट	उ	ज	ले	ड	त	दा	ह	ह
थ	फू	द	ध	प	टे	ल	र	रु
प	ल	फ	ब	स्ते	म	भो	र	न

ढूँढ़े हुए शब्द यहाँ लिखिए :

(१) ________ (५) ________ (९) ________

(२) ________ (६) ________ (१०) ________

(३) ________ (७) ________

(४) ________ (८) ________

८ पुरस्कार

– संकलित

हिमाचल में एक छोटा सा गांव था। गांव में रामसिंह नामक एक किसान रहता था। उसके पास खेत बहुत कम थे। मुश्किल से वह अपना और पत्नी का भरण-पोषण कर पाता था। कष्टों के बावजूद रामसिंह ईमानदारी से जीवन बिता रहा था। उसका विश्वास था कि सादगी और सच्चाई की ही विजय होती है।

एक दिन की बात है। गांव से कुछ दूर राज्य की राजधानी में वार्षिक उत्सव मनाया जाने वाला था। सारे गांव के लोग उत्सव में शामिल होने के लिए विभिन्न तैयारियां कर रहे थे। रामसिंह की पत्नी की भी इच्छा हुई कि उत्सव में भाग ले। किन्तु गरीब होने के कारण वह अपना मन मसोस कर रह

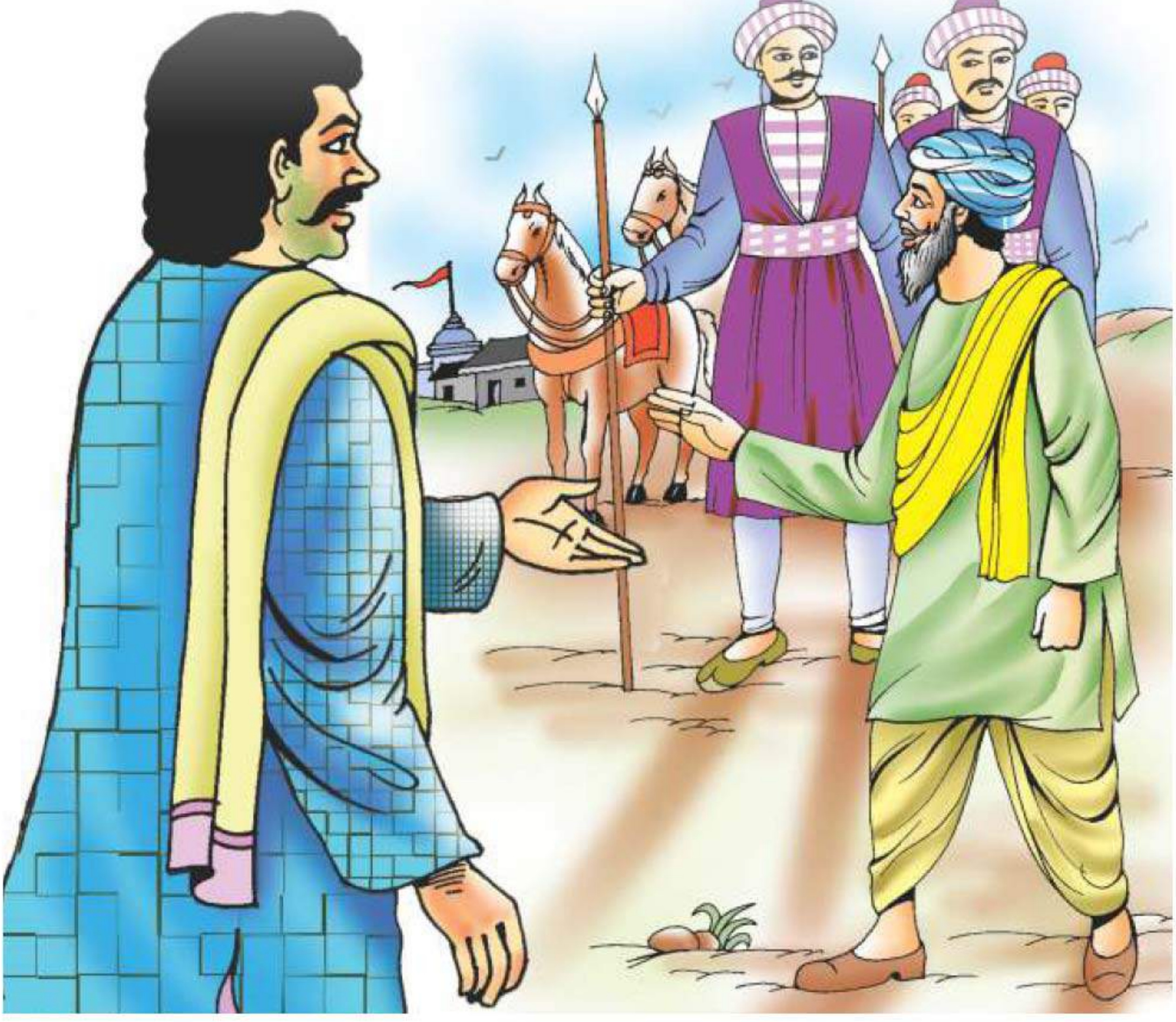

गई। पत्नी को उदास देखकर रामसिंह ने कारण पूछा। वह बोली – ''गांव के लोग राजधानी जाने की तैयारी में जी-जान से जुटे हुए हैं। वे वहां जाकर राजा के दर्शन भी करेंगे। सुना है कि राजा पारसमणी होता है। जो भी धातु उससे छू जाती है, वह तत्काल सोना बन जाती है। यदि किसी तरह हम भी राजा के पैर से कोई धातु का बरतन छुआ देते, तो कितना अच्छा होता।''

पत्नी की बात सुनकर रामसिंह मन-ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। एक क्षण वह चुप रहा। लेकिन फिर मुस्कराकर बोला- ''बात तो मैंने भी सुनी है। लेकिन हमारे पास तो लोहे के एक फूटे तवे के अलावा कोई धातु का बर्तन ही नहीं है। इस बारे में सोचने से फायदा भी क्या?''

पत्नी के मन में आस जगी। उसने कहा- ''तो तुम इस तवे ही को लेकर राजधानी चले जाओ। वहां महाराज जैसे ही इसे छू देंगे, तत्काल यह सोने का हो जाएगा। फिर हम जीवन भर सुख से रहेंगे।''

रामसिंह के मन में भी आशा की किरण उदित हुई। उसे लगा कि फूटा हुआ तवा सोने का हो गया है। अब क्या था! वह तरह-तरह के विचारों और कल्पनाओं में खो गया। कुछ देर बाद उसने तवा लेकर राजधानी जाने का निश्चय कर लिया। अब तो पत्नी की खुशी का पारावार न रहा।

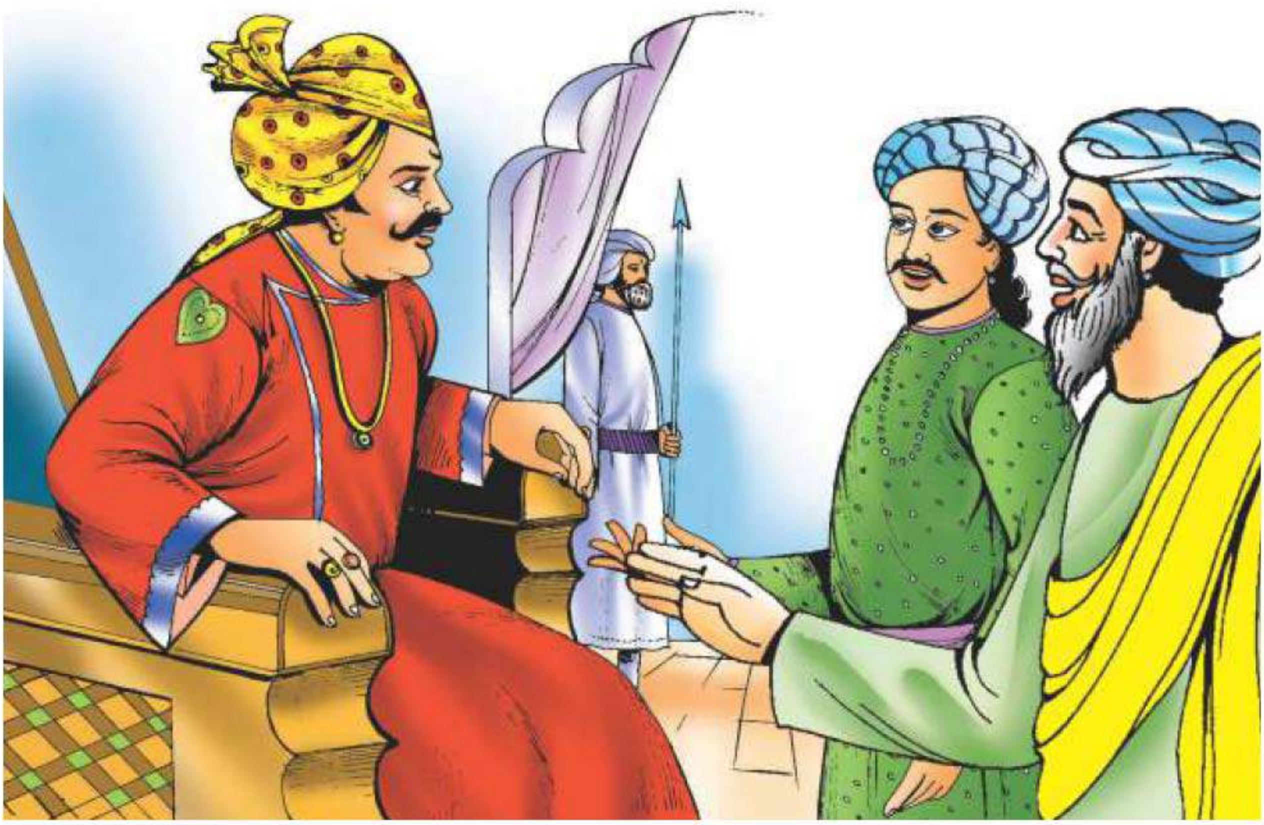

शाम को उसने जल्दी से रोटियां बनाईं और फिर तवे को मिट्टी से भली-भांति साफ कर एक ओर रख दिया। अगले दिन प्रातः काल रामसिंह तवा लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा। चलते-चलते शाम को अंधेरा होने तक वह राजधानी पहुंच गया। उत्सव के कारण राजधानी में बड़ी चहल-पहल थी। भीड़-भड़ाके को देखकर वह विस्मय में डूबे बिना न रहा। अब उसके सामने रात को ठहरने की समस्या उठ खड़ी हुई। राजधानी में न उसका कोई सगा-सम्बन्धी था, न ही जान-पहचान वाला। उसके पास रुपये होते तो भी वह कहीं आराम से रात बिता सकता था। थोड़ी देर के बाद रामसिंह उस भीड़-भाड़ में भी अपने को अकेला-सा अनुभव करने लगा। सहसा उसे सराय का खयाल आया और वह लोगों से पता पूछते-पूछते सराय की ओर चल पड़ा। कुछ देर के बाद वह सराय में जा पहुंचा।

उस दिन सराय स्त्री-पुरुषों से खचाखच भरी हुई थी। तिल रखने को भी जगह नहीं थी। जगह न होने के कारण लोग आंगन और खुले में बिस्तर बिछाकर रात काट रहे थे। रामसिंह ने सराय के मालिक के पास जाकर ठहरने के लिए जगह मांगी। वह असल में राजा के द्वारा नियुक्त गुप्तचर अधिकारी ही था। उसका काम सराय में ठहरने वाले अपरिचित लोगों पर निगाह रखना और उनकी यात्रा का उद्देश्य पता लगाना था। बाद में उसे स्वयं सही-सही जानकारी सीधे राज्य को सौंपनी पड़ती थी। इस नियम का कड़ाई से पालन होता था। उसके कारण राजा को कई बार षड्यन्त्रों का भी पता चल जाता था। कभी-कभी उसे अच्छे लोगों से भेंट का भी अवसर मिल जाया करता था।

जब रामसिंह ने वहां आश्रय मांगा तो सराय के मालिक ने बातों-बातों में उसकी यात्रा का उद्देश्य भी पूछ लिया। ईमानदार और भोले-भाले रामसिंह ने बिना हिचक के सारी बात उससे सच-सच कह दी। उसकी बात सुनकर सराय के मालिक को हंसी आए बिना न रही। रामसिंह के भोले स्वभाव को देखकर उसने ठहरने और भोजन का समुचित प्रबन्ध करवा दिया। यह देख रामसिंह अपने भाग्य को सराहने लगा। उसे लगा कि लोहे का तवा धीरे-धीरे सोने में बदलने लगा है।

अगले दिन सराय के मालिक ने रामसिंह के बारे में राजा को सारी बात बता दी। सुनकर राजा भी पहले हंस पड़ा। फिर एकाएक गंभीर हो गया। उसने सोचा, मुझ पर लोग कितना विश्वास रखते हैं। इस विश्वास की रक्षा की जानी चाहिए। उसने सराय के मालिक को आदेश दिया कि रामसिंह को दरबार में हाजिर किया जाए।

वापस लौटकर सराय के मालिक ने रामसिंह को पास बुलाया और कहा, "मैं राज-दरबार जा रहा हूं। चाहो तो तुम चल सकते हो।"

यह सुनकर रामसिंह मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, चलो राजा से मिलने की साध तो पूरी हुई।

कुछ देर बाद सराय का मालिक रामसिंह को लेकर राज-दरबार की ओर चल पड़ा। आगे-आगे सराय का मालिक और पीछे-पीछे रामसिंह। कुछ देर बाद दोनों राज-दरबार में पहुंचे।

राजा अत्यन्त बुद्धिमान था। मनुष्यों की परख करने की उसमें अद्‌भुत शक्ति थी। रामसिंह को देखते ही वह जान गया कि गरीब होते हुए भी वह ईमानदार और परिश्रमी है। उसके फटे कपड़े देखकर उसे दु:ख भी हुआ। क्षण भर के लिए उसे लगा कि उसका राजा होना व्यर्थ है। प्रजा फटेहाल रहे और वह स्वयं ऐशो-आराम में डूबा रहे। राजा मन-ही-मन ग्लानि से भर उठा। फिर उसने स्वयं पर नियंत्रण किया और अपने अंगरक्षक को इशारा किया। अंगरक्षक ने तुरन्त रामसिंह को राजा की बगल में बैठा दिया।

एक फटेहाल व्यक्ति को राजा की बगल में बैठते देखकर सभासदों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ईर्ष्या से कई चापलूस दरबारी जल-भुनकर राख हो गए। राजा के पास जाते समय रामसिंह ने तवे को उनके पैर से छुआना चाहा, किन्तु उसने रामसिंह के विश्वास को ज्यों-का-त्यों बनाए रखने के लिए तवा पैर से स्पर्श नहीं होने दिया। उधर दरबारियों ने समझा कि राजा की बगल में बैठा यह ग्रामीण अवश्य कोई धुरन्धर विद्वान है तभी राजा ने उसे अपनी बगल में आसन दिया है।

निश्चित समय पर दरबार उठ गया। राजा के आदेश से रामसिंह को विशेष अतिथि-भवन में ठहराया गया। शाही ठाठ-बाट देखकर रामसिंह को लगा कि वह स्वप्न देख रहा है। भय से उसकी भूख-प्यास हवा हो गई। जैसे ही वह अतिथि-भवन में लाया गया, वहां सेठ-साहूकारों का जमघट लग गया। वे अपने साथ विभिन्न और अमूल्य उपहार लाए थे। हर व्यक्ति राजा से कोई-न-कोई काम निकालना चाहता था। अब क्या था! रामसिंह के पास सोना, चांदी, हीरे-जवाहरातों का ढेर लग गया।

अगले दिन राजा चहलकदमी करते हुए अतिथि भवन में चला आया। रामसिंह ने राजा को देखते ही अभिवादन किया। अभिवादन का उत्तर देते हुए राजा ने पूछा-"अरे रामसिंह तुम्हारा वह फूटा तवा कहां है?"

यह सुनकर रामसिंह को समझते देर न लगी कि राजा सारी बात जान गया है और यह सब उसी की कृपा का फल है। उसने तनिक सोचकर उत्तर दिया- "महाराज, वह लोहे का तवा आपकी कृपा से कभी का सोने का हो गया है।"

रामसिंह का बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह मुस्कराते हुए बोला– ''देखो, किसी का पैर छूने से लोहा सोना नहीं बनता। न जाने किसने तुमसे झूठ बात कह दी और तुम मान गए।''

रामसिंह ने मुस्कराते हुए कहा–''नहीं, महाराज ! किसी ने मुझसे झूठ नहीं कहा। मैंने आज समझ लिया कि राजा स्वयं एक पारसमणी होता है।'' उसकी बात सुनकर राजा प्रसन्न हो गया। उसने कहा–''अब तुम यह सब धन लेकर खुशी से अपने घर जा सकते हो।''

राजा की आज्ञा पाकर सेवकों ने सब सामान खच्चरों पर लादकर रामसिंह को विदा किया। रामसिंह को उसकी सरलता और नेकनीयती का पुरस्कार मिल गया।

शब्दार्थ

कष्ट तकलीफ, दुःख **वार्षिक उत्सव** वर्ष के अंत में मनाया जानेवाला उत्सव **उदास** दुःखी **तत्काल** तुरंत **प्रसन्न** खुश **प्रातःकाल** सवेरे, सुबह **विस्मय** आश्चर्य **ठहरना** रुकना **सराय** धर्मशाला **गुप्तचर** गुप्त संदेश पहुँचाने और लानेवाला **अपरिचित** अनजान **उद्देश्य** हेतु **आश्रय** आसरा **साध** इच्छा, आशा **परिश्रम** महेनत **व्यर्थ** बेकार **ग्लानि** अपने आप को दोषी समझना और दुःखी होना **ईर्ष्या** जलन **छूना** स्पर्श करना **अमूल्य** कीमती, **उपहार** भेंट **बुद्धिमत्तापूर्ण** बुद्धिमानी युक्त **पारसमणी** एक ऐसा पत्थर जिसके स्पर्श से कोई भी वस्तु सोना बन जाती है। **समस्या** परेशानी

मुहावरे

- भरण पोषण करना – पालन–पोषण करना
- मन मसोस कर रह जाना – मन मारकर रहना
- आशा की किरण उदित होना – आशा जगना
- खुशी का पारावार न होना – बहुत खुश होना
- विस्मय में डूबना – आश्चर्य चकित होना

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) रामसिंह कहाँ रहता था?

(२) रामसिंह की पत्नी को कहाँ जाने की इच्छा हुई?

(३) रामसिंह ने रात कहाँ बिताई?

(४) रामसिंह कैसा आदमी था?

(५) रामसिंह का विश्वास क्या था?

२. अनुलेखन कीजिए :

(१) विश्वास – ________ (२) सच्चाई – ________

(३) मुस्कराना – ________ (४) षड्‌यंत्र – ________

(५) गुप्तचर – ________ (६) प्रबन्ध – ________

(७) बुद्धिमत्ता पूर्ण – ________ (८) अद्‌भुत – ________

३. शब्दों के अर्थ दीजिए :

(१) प्रसन्न – ________ (२) आश्चर्य – ________

(३) तत्काल – ________ (४) मुश्किल – ________

४. समझकर लिखिए :

(१) एक लड़का – दो लड़के (२) एक बच्चा – ________

(३) एक कुत्ता – ________ (४) एक रुपया – ________

(५) एक कछुआ – ________

५. दिए गए वाक्यों को पाठ के अनुसार क्रम में लिखिए:

(१) राजधानी में वार्षिक उत्सव मनाया जानेवाला था।

(२) सुना है कि राजा पारसमणि होता है।

(३) मैनें आज समझ लिया है कि राजा पारसमणी होता है।

(४) हिमाचल में एक छोटा सा गाँव था।

(५) रामसिंह तवा लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा।

स्वाध्याय

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) रामसिंह की पत्नी ने उसे क्या लेकर राजा के पास भेजा?

(२) सराय का मालिक कौन था?

(३) रामसिंह को राजदरबार तक किसने पहुँचाया?

(४) राजा ने रामसिंह को कहाँ बैठाया?

(५) राजा ने तवे का स्पर्श अपने पैरों से क्यों नहीं होने दिया?

२. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(१) रामसिंह राजधानी में क्यों गया?

(२) रामसिंह राजा के पैरों से तवा क्यों छुआना चाहता था?

(३) हिमाचल का राजा कैसा था?

(४) रामसिंह के विश्वास को बनाए रखने के लिए राजा ने क्या किया?

(५) रामसिंह का लोहे का तवा सोने का कैसे बना?

३. दिए गए विधान कौन किससे कहता है? बताइए :

(१) ''सुना है कि राजा पारसमणी होता है।''

(२) ''हमारे पास तो लोहे के फूटे तवे के अलावा कोई धातू का बर्तन ही नहीं है।''

(३) ''मैं राजदरबार जा रहा हूँ।''

(४) ''अरे रामसिंह तुम्हारा वह फूटा तवा कहाँ है?''

(५) ''मैंने आज समझ लिया कि राजा स्वयं पारसमणी होता है।''

४. दिए गए शब्दों का उपयोग उदाहरण के अनुसार लिखिए :

(१) किसान : खेती करता है।

(२) गुप्तचर : ____________________

(३) राजा : ____________________

(४) पारसमणी : ____________________

(५) मोमबत्ती : ____________________

(६) दीपक : ____________________

(७) अंगरक्षक : ____________________

५. (अ) समझकर लिखिए :

(१) छोटा × बड़ा　　(२) गरीब × ____________

(३) धातु × ____________　　(४) रात × ____________

(५) मालिक × ____________　　(६) राजा × ____________

५. (ब) उदाहरण के अनुसार कोष्टक में से शब्द ढूंढकर समझकर लिखिए :

चा	पा	क	ट	य	पा	र	स	म	णी	क
र	प	च	अ	च	प	प	रि	श्र	मी	ध
य	र	लू	ल	ग	क्ष	गु	ट	य	म	सो
वि	त	प	स	ब	र	व	प्त	ख	र	ना
बु	द्वा	द	य	त	प	क्ष	व	च	र	स
द्वि	द	न	ग	स	म	न	क	ज	र	प
मा	ट	ठ	य	रा	म	न	स	र	प	फ
न	ग	म	त	य	य	ने	क	नि	य	ती

(१) परिश्रमी : रामसिंह बहुत परिश्रमी था।

(२) ______

(३) ______

(४) ______

(५) ______

(६) ______

(७) ______

(८) ______

(९) ______

(१०) ______

९ लोभी का अंत

– संकलित

चार ब्राह्मण युवक थे। चारों बड़े गरीब थे।

इन चारों युवकों ने एक रात बैठे–बैठे अपने भविष्य के बारे में बड़ी गंभीरता से सोचना शुरू किया कि हम लोग कब तक ऐसे मारे–मारे फिरते रहेंगे, कब तक अपने मां–बाप पर बोझ बने रहेंगे? हमें शहर जाकर कोई काम करना चाहिए। एक युवक ने उन सबसे कहा।

उसकी बात से सभी सहमत हो गए। दूसरे दिन सुबह ही वे लोग शहर की ओर चल पड़े। रास्ता लम्बा था, इसलिए शहर पहुंचने से पूर्व ही उन्हें रात हो गई और वे एक साधु की कुटिया में ठहर गए। वह साधु बहुत बूढ़ा था, न जाने कितने वर्षों से वहां बैठा तपस्या कर रहा था।

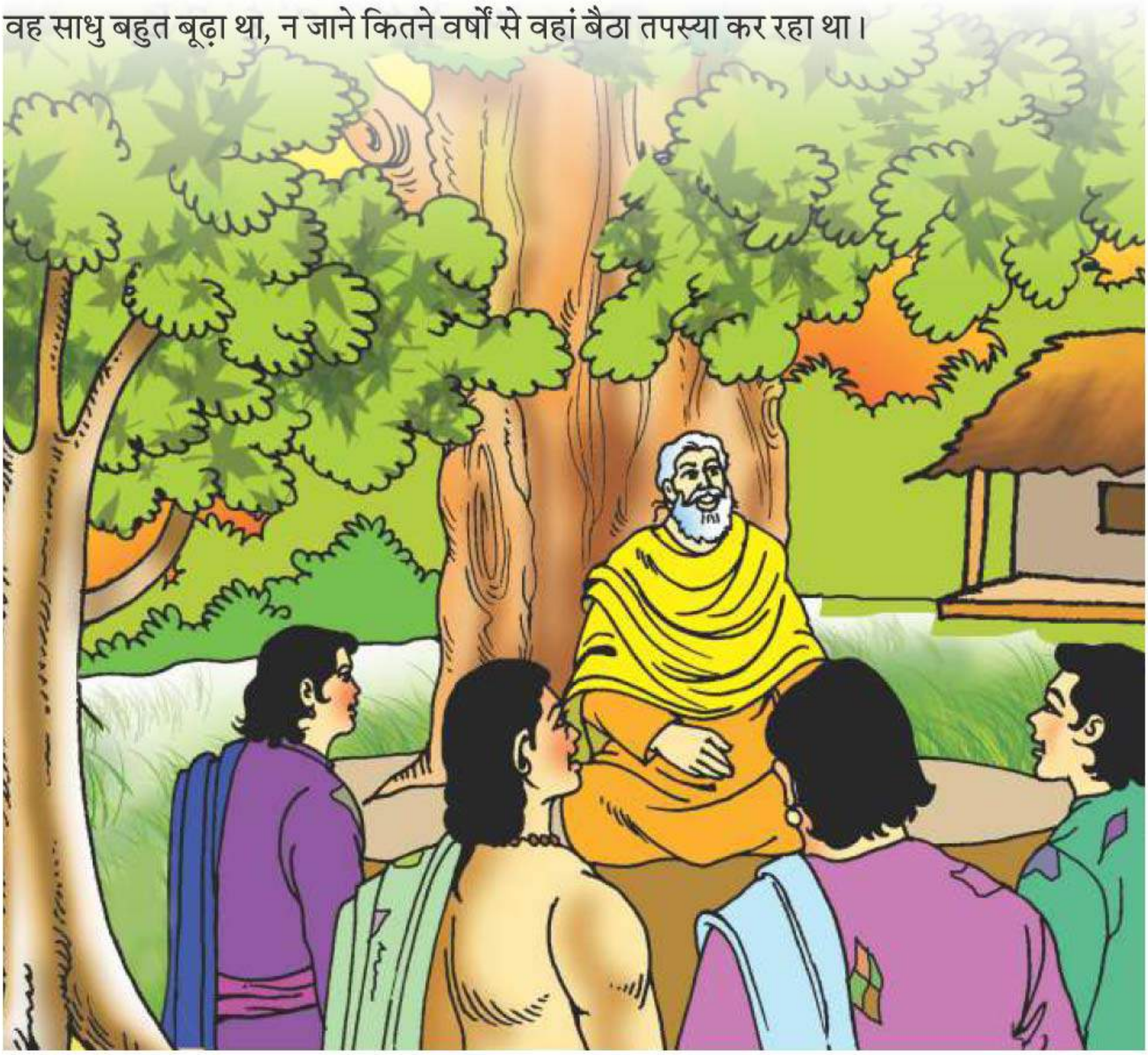

उसने अपने तपोबल से उनके विषय में सब कुछ जान लिया। उसे उन पर तरस आ गया। वह बोला- ''बिना परिश्रम के संसार में कुछ नहीं मिलता। मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जान चुका हूं।''

''प्रभु हम पर दया करो।'' चारों युवक उनके चरणों में गिर गए।

''देखो, यह चार मोमबत्तियां मैं तुम्हें दे रहा हूं, इन चारों मोमबत्तियों को लेकर तुम चारों हिमालय पर्वत पर चढ़ना शुरू करो। जिस युवक की मोमबत्ती जिस स्थान पर अपने आप गिर जाए उसी स्थान को खोदना शुरू कर दो। वहां पर तुम्हें एक खजाना मिलेगा। उस खजाने को लेकर तुम मेरे पास वापस आ जाओ, बस इससे आगे मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा।''

साधु की बात मानकर वे चारों युवक अपनी-अपनी मोमबत्तियां लेकर हिमालय पर्वत पर चढ़ने लगे, वे चारों बहुत खुश थे, क्योंकि उन्हें साधु की कृपा से बहुत बड़ा खजाना मिलने वाला था।

जैसे ही वे पर्वत की एक ऊंची चोटी पर पहुंचे, तो उनमें से एक के हाथ में से मोमबत्ती गिर गई।

''लो भाई, हो गया कल्याण अपना काम शुरू करो।'' उन चारों ने मिलकर उस पर्वत की खुदाई शुरू कर दी। जैसे ही उन्होंने उस पर्वत को खोदा तो तांबे का खजाना निकला।

''अरे यार यह तो तांबा है, इस तांबे को ले जाकर हम क्या करेंगे ?''

वे सब फिर खोदने लगे–इस बार चांदी मिल गई।

''वाह... वाह... अब तो चांदी भी मिल गई... चलो अब और खोदो, शायद अब सोना भी मिल जाएगा, फिर हीरे मिलेंगे...।''

''सब कुछ मिलेगा साधु ने आशीर्वाद दिया है, अब किसी चीज की कमी नहीं रहेगी... अब हमें इससे भी आगे के पहाड़ों पर जाना चाहिए अभी तो हमारे पास दो मोमबत्तियां और हैं... आगे हमें बहुत धन मिल सकता है।''

''देखो दोस्तो।'' एक युवक बोला– ''अधिक लालच ठीक नहीं। जो मिला है, वही लेकर साधु के पास चलो।''

उसका समर्थन सिर्फ एक युवक ने किया। बाकी दो अधिक धन के लालच में आगे बढ़ गए। वो लोभ में फंस चुके थे।

जैसे ही वह एक ऊंचे पर्वत पर पहुंचे तो तीसरे के हाथ से मोमबत्ती गिर पड़ी, उस स्थान को खोदते–खोदते वे नीचे तक पहुंचे तो वहां से उन्हें सोने का खजाना मिला।

तीसरे ने चौथे से कहा, ''चल भाई, अब हम भी वापस चलते हैं, हमे हमारा खजाना मिल गया।''

''नहीं भैया, अभी तो चौथी मोमबत्ती बाकी है... हमें और आगे चलना चाहिए, हो सकता है उस खजाने में हमें हीरे–मोती मिल जाएं।''

''न भाई, अब मैं और आगे नहीं जाऊंगा, अपने लिए इतना सोना ही काफी है। तुम चाहो तो आगे जाओ, मैं तो चला।''

''ठीक है, अब मैं खजाना लेकर ही जाऊंगा।'' चौथा युवक जो बहुत लालची था आगे बढ़ने लगा।

अपने तीनों साथियों को छोड़कर वह अकेला मोमबत्ती लिए पहाड़ पर चढ़ रहा था। आगे चलकर उसने देखा कि एक आदमी पहाड़ी पर खड़ा था, उसके माथे पर हीरा चमक रहा था।

''अरे वाह... मिल गया... मिल गया... हीरों का खजाना मिल गया...।''

जैसे ही वह युवक आगे बढ़ा, तो उस आदमी के माथे पर लगा हीरा चक्र का रूप धारण करके घूमता हुआ उसके माथे पर आकर लगा। डर के मारे उसका सारा शरीर कांपने लगा।

"अरे यह क्या? आपने मुझे इस तरह से क्यों मारा... इन हीरों को पाने के लिए तो मैं आया हूं।"

"ओ मूर्ख, लालची इन्सान ! तूने साधु का कहना नहीं माना, फिर अपने मित्रों का भी कहना नहीं माना, एक दिन मैंने भी यही भूल की थी और लालच में अंधा होकर इस खजाने को पाने के लिए चला आया था। इस जादू के चक्कर को मैंने भी हीरा समझा था, इसने मुझे इस प्रकार जकड़ लिया कि मैं आज तक मुक्त नहीं हो सका, लेकिन आज मैं मुक्त होकर जा रहा हूं, क्योंकि मेरे स्थान पर अब तुम इसके बंदी बनोगे।"

"लेकिन भैया मुझे..."

"तुम्हें तो अब वही आकर बचाएगा जो मेरी और तुम्हारी तरह अक्ल का अंधा और लोभी होगा।" यह कहकर वह युवक भी चलता बना।

शब्दार्थ

भविष्य आनेवाला समय, एक काल **बोझ** भार, वजन **पूर्व** पहले, एक दिशा का नाम **ठहरना** रुकना **पर्वत** पहाड़ **परिश्रम** महेनत **लालच** लोभ **मूर्ख** बेवकूफ **अक्ल** बुद्धि **जकडना** कसकर बांधना **मुक्त** स्वतंत्र **बंदी** कैदी **चोटी** शिखर **खजाना** धन **सुबह** सवेरा

मुहावरे

✳ बोझ बनना – भाररुप बनना, आश्रित होना

✳ तरस आना – दया आना

✳ लोभ में फँसना – लालच करना

✳ अक्ल का अंधा होना – बुद्धिहीन होना

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) कितने युवक थे?

(२) रास्ते में युवकों को कौन मिला?

(३) साधु ने उन्हें क्या दिया?

(४) साधु ने उन्हें किस पर्वत पर जाने को कहा?

२. (अ) अनुलेखन कीजिए :

(१) भविष्य = ________ (२) तपस्या = ________

(३) आशीर्वाद = ________ (४) पूर्व = ________

२. (ब) समझकर लिखिए :

उदाहरण : पूर्व × पश्चिम

(१) गरीब × ________ (२) सहमत × ________

(३) ऊंची × ________ (४) मुर्ख × ________

२. (क) समझकर लिखिए :

उदाहरण : सुबह = सवेरा, प्रात:काल

(१) बोझ = ________, ________

(२) कृपा = ________, ________

(३) पर्वत = ________, ________

(४) परिश्रम = ________, ________

स्वाध्याय

१. **एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**

(१) ब्रह्मण युवक कहाँ जा रहे थे?

(२) युवकों को कहाँ ठहरना पड़ा?

(३) चौथा युवक कैसा था?

(४) युवक ने किसे हीरा-चक्र समझा था?

२. **दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(१) साधु ने युवकों के बारे में कैसे जाना?

(२) चारों युवक क्यों खुश थे?

(३) युवकों को कौन-कौन सा खजाना मिला?

(४) चक्रधारी युवक चक्र से कैसे मुक्त होगा?

३. **सही गलत के चिह्न लगाइए :**

(१) चारों युवक बड़े आलसी थे।

(२) साधु ने युवकों को मोमबत्तियाँ दीं।

(३) सबसे पहले उन्हें सोने का खजाना मिला।

(४) चौथे युवक के सिर पर जादुई चक्र आ गया।

४. **(अ) रेखांकित शब्दों के अर्थ का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

उदाहरण : बिना परिश्रम संसार में कुछ नहीं मिलता। = हमें महेनत से पढ़ना चाहिए।

(१) वे पर्वत की ऊंची चोटी पर पहुँचे। =

(२) वे चारों बहुत खुश थे। =

(३) वे लोभ में फँस चुके थे। =

(४) मैं आज मुक्त होकर जा रहा हूँ। =

४. (ब) कौन-किससे कहता है ? बताइए :

(१) हमें शहर जाकर कोई काम करना चाहिए।

=

(२) बिना परिश्रम के संसार में कुछ भी नहीं मिलता।

=

(३) प्रभु ! हम पर दया करो।

=

(४) इस जादू के चक्कर को मैंने भी हीरा समझा था।

=

४. (क) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(१) बिना परिश्रम के : ______

(२) तुम चारों हिमालय : ______

(३) सब कुछ मिलेगा : ______

(४) अरे वाह... मिल... गया... मिल गया... हीरों : ______

५. ''लालच बुरी बला है'' शीर्षक पर पाँच वाक्य लिखिए :

(१) ______

(२) ______

(३) ______

(४) ______

(५) ______

पुनरावर्तन २

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) सूरज के बारे में नानी से बालक क्या पूछता है?

(२) चिड़िया अपने बच्चों को किसके भरोसे छोड़कर जाती थी?

(३) हमारा देश कैसे अच्छा बनेगा?

(४) रामसिंह क्या लेकर राजा के पास गया?

(५) साधु ने युवकों को क्या दिया?

२. दिए गए विधान कौन-किससे कहता है? बताइए :

(१) "मैं तुम्हारे विषय में सबकुछ जान चुका हूँ।"

(२) "अरे ! रामसिंह तुम्हारा वह फूटा तवा कहाँ है?"

(३) "अरे, बिल्ले-कभी तो सोचकर बोला कर।"?

(४) "कोयल इतनी अच्छी क्यों लगती है?"

३. (अ) शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

उदाहरण : मांगनेवाला – याचक

(१) लोभ करनेवाला ________ (२) क्रोध करनेवाला ________

(३) परिश्रम करनेवाला ________ (४) दरबार में बैठनेवाला ________

३. (ब) समझकर लिखिए :

उदाहरण : छोटा × बड़ा

(१) दिन × ________ (२) सच × ________

(३) सुबह × ________ (४) मालिक × ________

३. (क) समान अर्थवाले अन्य शब्द लिखिए :

(१) दोस्त = मित्र, साथी

(२) सेवक = ________, ________

(३) खुश = ________, ________

(४) सूर्य = ________, ________

(५) चंद्र : ________, ________

४. (अ) रेखांकित शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(१) बिना परिश्रम संसार में कुछ भी नहीं मिलता।

=

(२) राजा ने अपने अंगरक्षक को इशारा किया।

=

(३) आज मैं मुक्त होकर जा रहा हूँ।

=

(४) गुलाबों की महक से देश महकेगा।

=

४. (ब) अंगो को उनके काम से मिलाइए :

	अंग			काम
(१)	पैर	-	☐	संगीत सुनते हैं।
(२)	हाथ	-	☐	चलते हैं।
(३)	आँख	-	☐	बल्ला घुमाते हैं।
(४)	कान	-	☐	सुंदर वस्तुओं को देखते हैं।

५. (क) काव्य पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(१) एक चमक ________________ फूल खिलेंगे।

(२) कैसे खिलते ________________ कहानी।

५. (अ) वाक्य पूर्ण कीजिए :

(१) बिना परिश्रम ________________

(२) तुम इस तवे को ________________

(३) वह लोहे का तवा आपकी ________________

(४) आओ हाथ बढाएँ ________________

५. (ब) समान अर्थवाले शब्द कोष्ठक पर से ढूँढकर लीखिए :

मि	प	चो	टी	र	त	प
नि	त्र	य	म	ह	क	र्व
ह	द्रा	ता	दि	च	रा	त
आ	क	स	म	व	त्रि	ल
प	स	र	वे	ख	स	ला
क	र	मा	बो	रा	लो	ल
च	म	र	न	ख	प	च

(१) नींद = ________

(२) आकाश = ________

(३) दोस्ती = ________

(४) सुगंध = ________

(५) मोर = ________

(६) दिन = ________

(७) रात = ________

(८) पहाड़ = ________

(९) शिखर = ________

(१०) लोभ = ________

हिन्दी

कक्षा ३

(द्वितीय सत्र)

१० अम्माँ की रसोई में

– संकलित

हल्दी दहके, धनिया महके,
अम्माँ की रसोई में।

आन बिराजे हैं पंचायत में
राई और जीरा।
पता चले न यहाँ किसी को
राजा कौन फकीरा।
सिंहासन हैं ऊँचे सबके
अम्माँ की रसोई में।

आटा-बेसन, चकला-बेलन,
घूम रहे हैं बतियाते।
राग-रसोई बने प्यार से
ही अच्छी, ये समझाते।
रूखी-सूखी से रस टपके
अम्माँ की रसोई में।

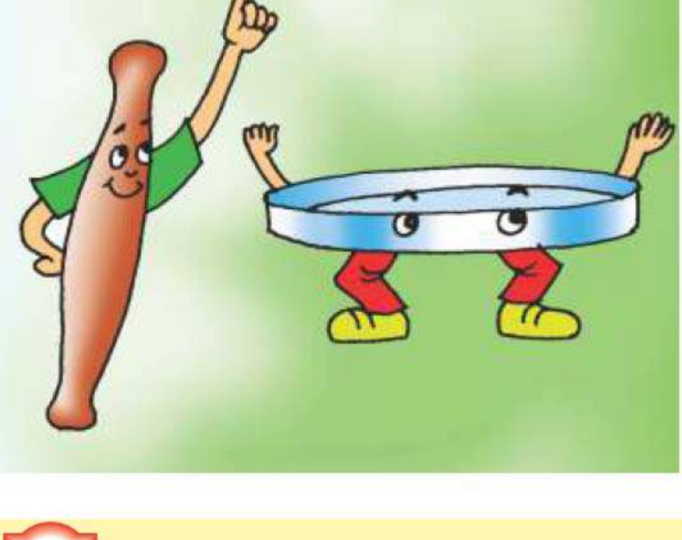

थाली, कड़छी और कटोरी,
को सूझी है मस्ती।
छेड़ रही है गर्म तवे को
दूर-दूर हँसती-हसती।
दिखलाती हैं लटके-झटके
अम्माँ की रसोई में।

शब्दार्थ

दहके जलना **महके** सुगंध **आन बिराजे** पधारना, बैठना **पंचायत** पंचों की सभा **फकीरा** कंगाल, भिखारी

अभ्यास

१. निम्नलिखित मसालों के रंग बताइए :

(१) हल्दी - ☐ (२) धनिया - ☐

(३) राई - ☐ (४) जीरा - ☐

२. निम्नलिखित बर्तनों के चित्र दिए गए बॉक्स में बनाईए :

(१) चकला - ☐

(२) बेलन - ☐

(३) थाली-कटोरी - ☐

(४) कड़छी – ☐

३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए :

(१) अम्माँ की रसोई में हल्दी और धनिया क्या कर रहे हैं ?

(२) राई और जीरा क्या कर रहे हैं ?

(३) अम्माँ की रसोई में सबके सिंहासन कैसे हैं ?

(४) आटा-बेसन क्या कर रहे हैं ?

(५) थाली-कटोरी और कड़छी क्या कर रही हैं ?

४. निम्नलिखित मसालों के स्वाद के बारे में जानिए।

नमक, मिर्च, हल्दी, अमचूर

५. आपके घर में रसोईघर के मसालों और बरतनों की सूची बनाइए और उनका उपयोग जानिए।

स्वाध्याय

१. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : हल्दी – पीली

मिर्च – ________

नमक – ________

राई – ________

जीरा – ________

२. एक या दो वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) 'रसोईघर' में क्या-क्या होता है ?

(२) 'राग-रसोई' कैसे बनता है ?

(३) 'गर्म तवे को दूर-दूर से छेड़ती है' - इसका अर्थ बताइए।

(४) 'रूखी-सूखी से रस टपके' - अम्माँ की रसोई में ऐसा कैसे होता है ?

३. 'अ' से 'ब' के जोड़ मिलाइए :

अ	ब
(१) चमचा	(१) 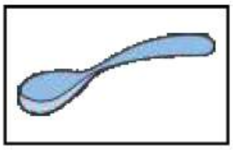
(२) थाली	(२) 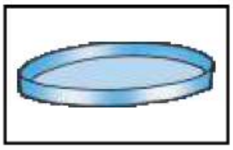
(३) कटोरी	(३) 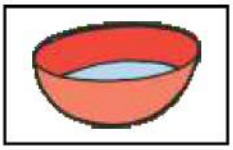
(४) कड़छी	(४)
(५) मसाले	(५)

११ बन्दर और टोपीवाला

– संकलित

हर चित्र के बारे में दो-दो वाक्य लिखो। बन गई तुम्हारी कहानी –

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(१) चित्र में आदमी क्या बेचने निकला है ?

(२) आदमी ने टोपियाँ कहाँ रखीं ?

(३) बन्दर ने क्या किया ?

(४) टोपियाँ अन्त में किसे मिलीं ?

२. निम्नलिखित शब्दों का उपयोग करके वाक्य बनाइए :

(१) पेड़ : ____________________

(२) टोपी : ____________________

(३) नींद : ____________________

(४) नकल : ____________________

(५) खुश : ____________________

३. निम्नलिखित शब्दों को योग्य अक्षर चुनकर पूरा कीजिए :

(१) आ ____ म। (का, रा, ला)

(२) चिम् ____ न्जी। (का, सा, पा)

(३) न ____ ल। (क, प, स)

(४) जंग ____ । (र, क, ल)

(५) मे ____ नत। (ह, स, ल)

४. सूचनानुसार कीजिए :

(१) अपनी पसंद के कोई भी दो पक्षी और दो जानवरों के नाम बताइए ।

(२) पक्षी और जानवरों की खुराक के विषय में बताइए ।

(३) पक्षी और जानवरों के रहने के स्थानों के बारे में जानिए और बताइए।

(४) आपको पक्षी और प्राणी क्यों पसन्द हैं ? चर्चा कीजिए।

५. अपनी पसन्द के प्राणी का चित्र बनाइए और उसके विषय में छः-सात वाक्य लिखिए :

१२ बरखा आई

– रमेश मिलन

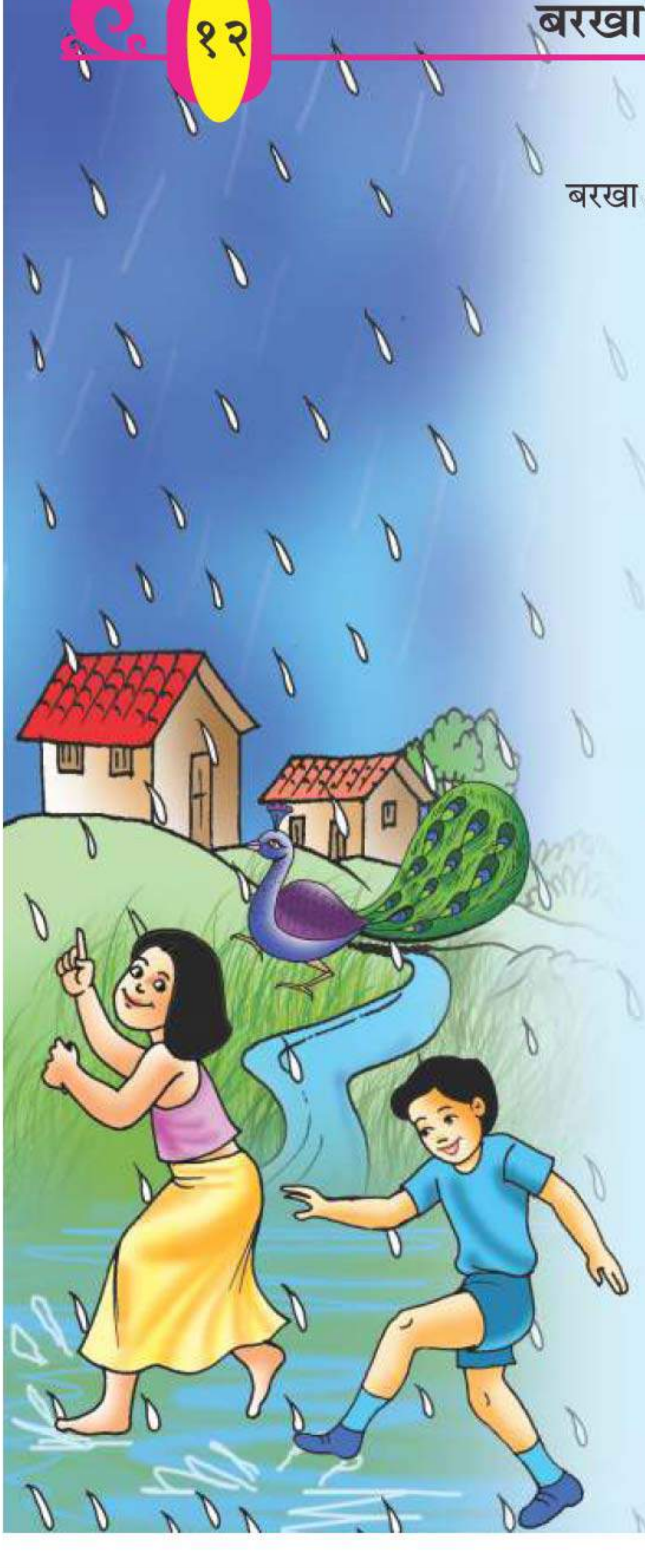

बरखा आई, बरखा आई
डाल–डाल हरियाली छाई।

काले–काले बादल आए
उमड़–उमड़ कर नभ पर छाए
बिजली चम–चम चमक दिखाए
रिमझिम–रिमझिम बूँदें आएँ।

डाल–डाल हरियाली छाई
पात–पात पर खुशियाँ आईं
सूखी नदियाँ जल भर लाईं
धरती पर खुशहाली आई।

कोयल कूक–कूक हरषाए
पीहू–पीहू पपीहा गाए
काला बादल गड़–गड़ गाए
मोर नाच–नाच लहराए।

ऋतु सुहानी है मन भाई
बरखा आई, बरखा आई।

शब्दार्थ

बरखा वर्षा, बारिश **नभ** आकाश **पात** पत्ता **हरषाए** खुश होना

अभ्यास

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) हर डाली पर हरियाली क्यों छाई है ?

(२) आकाश में कौन चमकता है ?

(३) बूँदें कैसे गिरतीं हैं ?

(४) वर्षाऋतु में कौन-कौन से पक्षी बहुत खुश होते हैं ?

(५) बादल किस प्रकार गीत गाता है ?

२. उदाहरण के अनुसार शब्द कविता में से ढूँढ़कर लिखिए :

उदाहरण : डाल-डाल

________	________	________
________	________	________
________	________	________
________	________	________

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(१) बादलों का रंग कैसा है ?

(२) आकाश पर बादल किस प्रकार छा जाते हैं ?

(३) वर्षाऋतु में आकाश में कैसा दृश्य दिखाई पड़ता है ?

(४) वर्षाऋतु में सूखी नदियाँ किससे भर जाती हैं ?

(५) वर्षाऋतु में धरती पर किस प्रकार खुशहाली छा जाती है ?

२. निम्नलिखित खाली जगह भरिए :

(१) बरखा आई, बरखा आई, डाल-डाल ________ छाई।

(२) काले-काले बादल आए, उमड़-घुमड़ कर ________ पर छाए।

(३) सूखी नदियाँ जल भर लाईं, धरती पर ________ आईं।

(४) काला बादल गड़-गड़ गाए, ________ नाच-नाच लहेराए।

३. सही जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
(१) बिजली चम-चम चमक दिखाए।	(१) पीहू-पीहू पपीहा गाए।
(२) कोयल कूक-कूक हरषाए।	(२) रिमझिम-रिमझिम बूँदे आएँ।
(३) डाल-डाल हरियाली छाई।	(३) बरखा आई, बरखा आई।
(४) ऋतु सुहानी है मन भाई	(४) पात-पात पर खुशियाँ आईं।

४. काव्य पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(१) काले-काले ________

____

____

________ बूँदे आएँ।

(२) कोयल कूक

____

____

________ नाच लहराए।

५. **समानार्थी शब्द लिखिए :**

(१) बरखा = ______ (२) जल = ______

(३) बादल = ______ (४) धरती = ______

(५) नभ = ______ (६) मोर = ______

(७) नदी = ______ (८) कोयल = ______

६. **शब्दकोश के क्रम में लिखिए :**

(१) चमक (२) खुशियाँ (३) पपीहा (४) सुहानी (५) काला

______, ______, ______, ______, ______,

७. **नीचे दिए गए प्रत्येक शब्द के दो-दो वाक्य बनाइए :**

(१) हरियाली : (१) ______

(२) ______

(२) बूँद : (१) ______

(२) ______

(३) खुशी : (१) ______

(२) ______

(४) ऋतु : (१) ______

(२) ______

(५) मन : (१) ______

(२) ______

८. नीचे दिए गए रंग के बारे में दो-दो वाक्य लिखिए :

(१) लाल : ____________________

____

(२) हरा : ____________________

____

(३) पीला : ____________________

____

९. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

कोयल	- कूक-कूक	कबूतर	- ________
पपीहा	- ________	कौआ	- ________
मोर	- ________	तोता	- ________
चिड़िया	- ________	बतख	- ________

१०. नाव का चित्र बनाकर रंग भरिए :

१३ गुरु की सेवा

– संकलित

कर्ण की उम्र सोलह–सत्रह वर्ष की हो चुकी थी। सारे हस्तिनापुर में वह प्रसिद्ध था। घर–घर में उसके संबंध में चर्चा होती थी – अधिरथ सारथि का पुत्र बड़ा विचित्र है। देखने में वह दूसरा सूर्य लगता है। उसके कानों में कुण्डल और छाती पर कवच है। कहते हैं, वह कानों में कुण्डल पहने ही पैदा हुआ था। सभी लोग यही समझते थे कि कर्ण अधिरथ का पालित पुत्र है। वह उसे गंगा की लहरों में बहते हुए एक संदूक में मिला था। कभी–कभी कर्ण की चर्चा राजभवन की दीवारों के भीतर कुंती के कानों में भी पड़ती थी। जब चर्चा सुनाई पड़ती थी, तो कुंती मन–ही–मन सोचने लगती थी, हो न हो, कर्ण के रूप में वही नवजात शिशु है, जिसे उसने गंगा की लहरों में संदूक में सुलाकर बहाया था, पर वह उसे भीतर ही भीतर दबा दिया करती थी–लोकापवाद का भय उसके कंठ को दबा दिया करता था।

जिस तरह चंद्रमा की कला बढ़ती है, उसी प्रकार कर्ण भी दिनों–दिन बढ़ता जा रहा था। ज्यों–ज्यों वह बढ़ता जा रहा था, त्यों–त्यों उसके मन की उमंगें भी बढ़ती जा रही थीं। वह बिना किसी हिचक के राजकुमारों के दल में जा मिलता था और उनके साथ खेलने का प्रयत्न किया करता था।

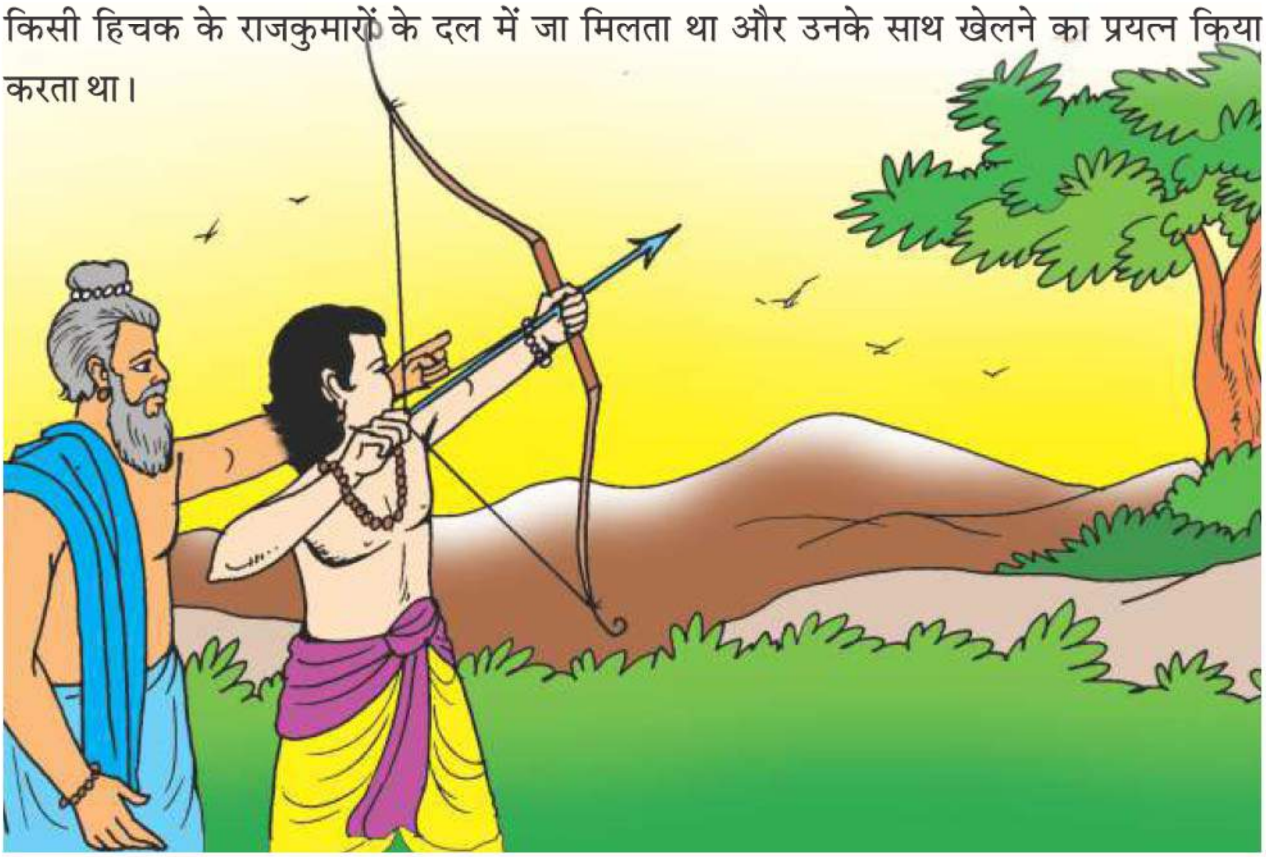

कर्ण जब राजकुमारों को द्रोणाचार्य से बाण विद्या सीखता हुआ देखता था, तो उसके मन में भी बाण विद्या सीखने की अभिलाषा उत्पन्न हुआ करती थी। उसने दो एक बार द्रोणाचार्य के पास जाकर उनसे निवेदन भी किया कि वे उसे भी धनुर्विद्या सिखाएँ, किंतु उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया कि वे राजकुमारों को छोड़कर और किसी को भी धनुर्विद्या की शिक्षा नहीं देते। यद्यपि द्रोणाचार्य ने कर्ण को निराश कर दिया था, किंतु वह निराश नहीं हुआ। वह निराश होने वाला था ही नहीं। वह सूर्य का पुत्र था। उसके हृदय में निरंतर आशाओं का तरुण सूर्य हंसता रहता था।

चारों ओर से उपेक्षित औरअपमानित होने पर भी कर्ण ने दृढ़ संकल्प किया, चाहे जो भी हो, वह धनुर्विद्या सीखकर रहेगा। सूर्यदेव ने कर्ण को प्रेरणा प्रदान की। वह उनकी प्रेरणा से धनुर्विद्या सीखने के लिए परशुराम की सेवा में उपस्थित हुआ। उन दिनों परशुराम एकांत में, एक पर्वत पर निवास करते थे। वे ब्राह्मण विद्यार्थियों को छोड़कर और किसी को भी धुनर्विद्या की शिक्षा नहीं देते थे। क्षत्रियों के तो वे शत्रु थे। कर्ण ने पहले से ही परशुरामजी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसने उनकी सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया–महामुने ! मैं एक ब्राह्मण युवक हूँ। धनुर्विद्या सीखने के लिए आप की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। मुझे अपने आश्रम में रहने की अनुमति प्रदान कीजिए।

कर्ण के तेजोमय रूप को देखकर परशुराम मुग्ध हो गए। आज तक उनके आश्रम में ऐसा तेजस्वी युवक कभी नहीं आया था। उन्होंने कर्ण को अपने आश्रम में रहने की अनुमति प्रदान कर दी। कर्ण

परशुरामजी के आश्रम में रहकर उनसे बाणविद्या सीखने लगा। वह परशुराम की बड़ी सेवा किया करता था। वह जानता था कि गुरु की सेवा से ही विद्या प्राप्त होती है। वह उनके खाने-पीने का ध्यान तो रखता ही था, साथ ही उनके आराम का भी ध्यान रखा करता था।

कर्ण कई वर्षों तक परशुराम के आश्रम में रहकर, उनसे बाणविद्या सीखता रहा। उन्होंने उसकी सेवाओं से मुग्ध होकर उसे संपूर्ण बाण विद्या सिखा दी। वह बाण विद्या का महान पंडित बन गया। संयोग की बात, एक दिन जब परशुराम कर्ण को शिक्षा दे रहे थे, उनकी आंखों में तंद्रा बरस पड़ी। उन्होंने कर्ण की ओर देखते हुए कहा, ''बेटा कर्ण ! मुझे नींद आ रही है। मैं सोना चाहता हूँ।''

कर्ण ने शीघ्र ही अपना दाहिना पैर फैला दिया। उसने दाहिना पैर फैलाकर परशुराम से कहा, ''गुरुदेव ! आप मेरी जांघ पर सिर रखकर सो जाइए।'' परशुराम कर्ण की दाहिनी जांघ पर सिर रखकर सो गए। उनकी आंखों में नींद बरस पड़ी। वे गहरी नींद में सोने लगे। सहसा एक विषैला कीड़ा रेंगता हुआ कर्ण की जांघ के नीचे जा पहुँचा। वह रह-रहकर कर्ण की जांघ में डंक चुभोने लगा। कर्ण की जांघ में प्राणलेवा पीड़ा पैदा होने लगी। फिर भी कर्ण यह सोचकर अविचलभाव से बैठा रहा कि, यदि वह हिलता-डुलता है तो उसके गुरु की नींद टूट जाएगी। उनके आराम में विघ्न पैदा होगा।

विषैले कीड़े के डंक मारने से कर्ण की जांघ में बहुत बड़ा घाव हो गया। घाव से रक्त भी बहने लगा। जब गरम-गरम रक्त का संस्पर्श परशुराम के शरीर से हुआ तो उनकी नींद खुल गई। वे उठकर बैठ गए। कर्ण की जांघ से बहते हुए रक्त को देखकर वे आश्चर्य की लहरों में डूब गए। वे कुछ क्षणों तक मन ही मन सोचते रहे, फिर बोले, ''तुम्हारी जांघ में तो बहुत बड़ा घाव हो गया है। घाव से रक्त की धारा निकल रही है। आश्चर्य है कि फिर भी तुम अविचलित बैठे हुए हो।''

परशुराम के मन में एक अद्‌भुत भाव जाग उठा - किसी ब्राह्मण में तो पीड़ा को सहन करने की ऐसी दृढ़ शक्ति होती नहीं। फिर यह युवक कौन है ? कहीं क्षत्रिय तो नहीं है ? परशुराम ने कर्ण की ओर देखते हुए कहा, ''सच-सच बताओ, तुम कौन हो ? क्या तुम क्षत्रिय हो ? तुम ब्राह्मण नहीं हो ब्राह्मण में पीड़ा को सहन करने की ऐसी शक्ति नहीं होती। देखो, यदि मुझसे कुछ छिपाओगे, तो मैं श्राप दे दूंगा। तुमने मुझसे जो कुछ सीखा है, वह सब भूल जाओगे।''

कर्ण डर गया। उसने अपनी पूरी कहानी परशुरामजी पर प्रकट कर दी। वे उस पर क्रुद्ध तो हुए, किंतु उसके विद्या प्रेम को देखकर उनके मन में दया भी पैदा हो उठी। कहने लगे, ''तुमने मुझे धोखे में डालकर बाणविद्या सीखी है। अब तुम अद्वितीय धनुर्धर तो नहीं बनोगे, किंतु महान अवश्य बनोगे।

शब्दार्थ

चर्चा संवाद **सारथि** रथ चलानेवाला **कवच** शरीर की रक्षा हेतु धारण किया गया वस्त्र **उमंग** उल्लास **अभिलाषा** प्रबल इच्छा, चाहत **धनुर्विद्या** धनुष चलाने की कला **इनकार करना** मना करना **तरूण** जवान **उपेक्षित** समाज से ठुकराया हुआ **रेंगना** पेट के बल सरककर चलना **प्रेरणा** प्रोत्साहन **शत्रु** दुश्मन **अनुमति** आज्ञा **प्रदान** योगदान **मुग्ध** प्रसन्न, खुश **तंद्रा** नींद **शीघ्र** तुरंत, जल्दी **विषैला** जहरीला **विघ्न** कठिनाई मुश्किल **रक्त** खून **संस्पर्श** छूना **अविचल** अचल, बिना हिले-डुले **पीड़ा** दर्द **क्रुद्ध** गुस्सा **समक्ष** सामने **शौर्य** वीरतापूर्ण कृत्य **श्राप** शाप

मुहावरे

- चंद्रमा की कला के समान बढ़ना – निरंतर बढ़ना
- दृढ़ संकल्प करना – निश्चय करना
- मुग्ध होना – खुश होना
- अनुमति प्रदान करना – आज्ञा देना
- आँखों में तंद्रा बरसना – खूब नींद आना
- डंक चुभोना – डंक मारना
- प्राण लेवा पीड़ा होना – खूब दर्द होना
- अविचलभाव से बैठना – बिना हिले-डुले बैठना
- विघ्न पैदा होना – कठिनाई आना
- आश्चर्य की लहर में डूबना – चकित होना
- क्रुद्ध होना – गुस्सा होना
- पराजित करना – हराना

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) कर्ण किसका पुत्र था ?

(२) कर्ण क्या पहनकर पैदा हुआ था ?

(३) कर्ण किसके साथ खेलने का प्रयास करता था ?

(४) कर्ण को किसने डंक मारा था ?

२. **समझकर लिखिए :**

उदाहरण : प्रसिद्ध × अप्रसिद्ध

(१) अपमानित × ________ (२) उपस्थित × ________

(३) दाहिना × ________ (४) जय × ________

३. **(अ) उदाहरण के अनुसार कीजिए :**

उदाहरण : शत्रु – दुश्मन

(१) अभिलाषा – ________, ________

(२) रक्त – ________, ________

(३) मस्तक – ________, ________

(४) पीड़ा – ________, ________

(ब) शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :

उदाहरण : दान देनेवाला – दानवीर

(१) कर्म करनेवाला : ________

(२) शौर्य दिखानेवाला : ________

(३) धनुष धारण करनेवाला : ________

(४) चक्र धारण करनेवाला : ________

(क) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : सब्जी – सब्जीवाला

(१) बाँसुरी – ________ (२) मिठाई – ________

(३) दूध – ________ (४) खिलौना – ________

स्वाध्याय

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) अधिरथ कौन था ?

(२) कर्ण क्या सीखना चाहता था ?

(३) कर्ण किसकी प्रेरणा से परशुराम का शिष्य बना ?

(४) परशुराम किसके शत्रु थे ?

२. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(१) हस्तिनापुर में कर्ण की चर्चा क्यों होती थी ?

(२) आश्रम में कर्ण गुरु की सेवा किस प्रकार करता था ?

(३) परशुराम ने कर्ण को श्राप क्यों दिया ?

(४) युद्ध में कर्ण की पराजय क्यों हुई ?

३. कौन-किससे कहता है ? बताइए :

(१) महामुने, मैं एक ब्राह्मण युवक हूँ । ______

(२) मुझे नींद आ रही है। मैं सोना चाहता हूँ। ______

(३) आप मेरी जांध पर सिर रखकर सो जाइए। ______

(४) सच-सच बताओ तुम कौन हो ? ______

४. (अ) सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(का, की, के, को)

(१) घर-घर में कर्ण ______ चर्चा होती थी।

(२) कर्ण सूर्य ______ पुत्र था।

(३) सूर्यदेव ने कर्ण ______ प्रेरणा दी।

(४) कर्ण ______ मन में धनुर्विद्या सीखने की चाह थी।

(ब) अनुलेखन कीजिए :

(१) हस्तिनापुर – ____________ (२) द्रोणाचार्य – ____________

(३) संकल्प – ____________ (४) ब्राह्मण – ____________

(५) आश्रम – ____________ (६) क्षत्रिय – ____________

(७) कर्ण – ____________ (८) तंद्रा – ____________

(क) पाठ में आए हुए पात्रों की सूची बनाइए :

उदाहरण : कर्ण, अधिरथ

५. **(अ) कोष्ठक में से महाभारत के पात्रों के नाम चुनकर लिखिए :**

क	म	कृ	पा	चा	र्य	धृ
द्रो	र्ण	अ	भी	य	अ	त
यु	णा	च	धि	ष्म	र्जु	रा
दु	धि	चा	ह	र	न	ष्ट्र
न	र्यो	ष्ठि	र्य	कुं	थ	क
कु	मा	ध	र	मी	ती	छ
ल	द्री	प	न	म	ट	ध
स	ह	दे	व	वि	दु	र

(१) ____________ (२) ____________

(३) ____________ (४) ____________

(५) ____________ (६) ____________

(७) ____________ (८) ____________

(९) ____________ (१०) ____________

(ब) ''कर्ण'' के विषय में दस वाक्य लिखिए :

(क) दिए गए अक्षरों पर से अर्थपूर्ण शब्द बनाइए।

(१) फ, ग, न = फागुन

(२) फ, ल = ____________

(३) ध, न, ष = ____________

(४) व, ध = ____________

(५) क्ष, त्र, य = ____________

पुनरावर्तन ३

१. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) अम्मा की रसोई में कौन मस्ती कर रहा था ?

(२) टोपीवाले को सोते देखकर बंदरों ने क्या किया ?

(३) पपीहा कैसे गाता है ?

(४) कर्ण क्या सीखना चाहता था ?

२. (अ) दो या तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) अम्मा की रसोई में कौन-कौन सा सामान है ?

(२) टोपीवाले ने बंदरों से टोपी कैसे वापस ली ?

(३) वर्षा के आने पर क्या होता है ?

(४) युद्ध में कर्ण की पराजय क्यों हुई ?

(ब) उदाहरण के आधार पर वाक्य बनाइए :

उदाहरण : जय : वीरों की हमेंशा जय होती है।

(१) बंदर : ______

(२) टोपी : ______

(३) बेलन : ______

(४) बेसन : ______

(५) कवच : ______

(६) कोयल : ______

(७) मोर : ______

(८) बादल : ______

(क) काव्य पंक्ति पूर्ण कीजिए :

(१) आटा ____________________

____

____

____

____

____________________ रसोई में।

(२) डाल-डाल ____________________

____

____

____________________ खुशहाली आई।

३. (अ) योग्य विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(का, की, के, को)

(१) हल्दी ______ रंग पीला होता है।

(२) आम ______ काटकर खाते हैं।

(३) कर्ण ______ जांघ में कीड़े ने काटा।

(४) कर्ण ______ धनुर्विद्या सीखनी थी।

(ब) समझकर लिखिए :

उदाहरण : टोपी –टोपीवाला

(१) पगडी ______ (२) मिठाई ______

(३) खिलौना ______ (४) बाँसुरी ______

(५) कुल्फी ______

४. (अ) समझकर लिखिए :

उदाहरण : छोटा × बड़ा

(१) सुख × ______ (२) हार × ______

(३) उजाला × ______ (४) रोना × ______

(५) दाहिना × ______ (६) जय × ______

(ब) अनुलेखन कीजिए :

(१) आशीर्वाद ______ (२) तपस्या ______

(३) उपस्थित ______ (४) श्राप ______

(५) द्रोणाचार्य ______ (६) ब्राह्मण ______

(७) धनुर्विद्या ______ (८) दृढ़ ______

५. (अ) वर्तनी सुधारिए :

(१) हस्तीनापुर ______ (२) अनुमती ______

(३) आशीर्वाद ______ (४) मुर्ख ______

(ब) दिए गए चित्र का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए :

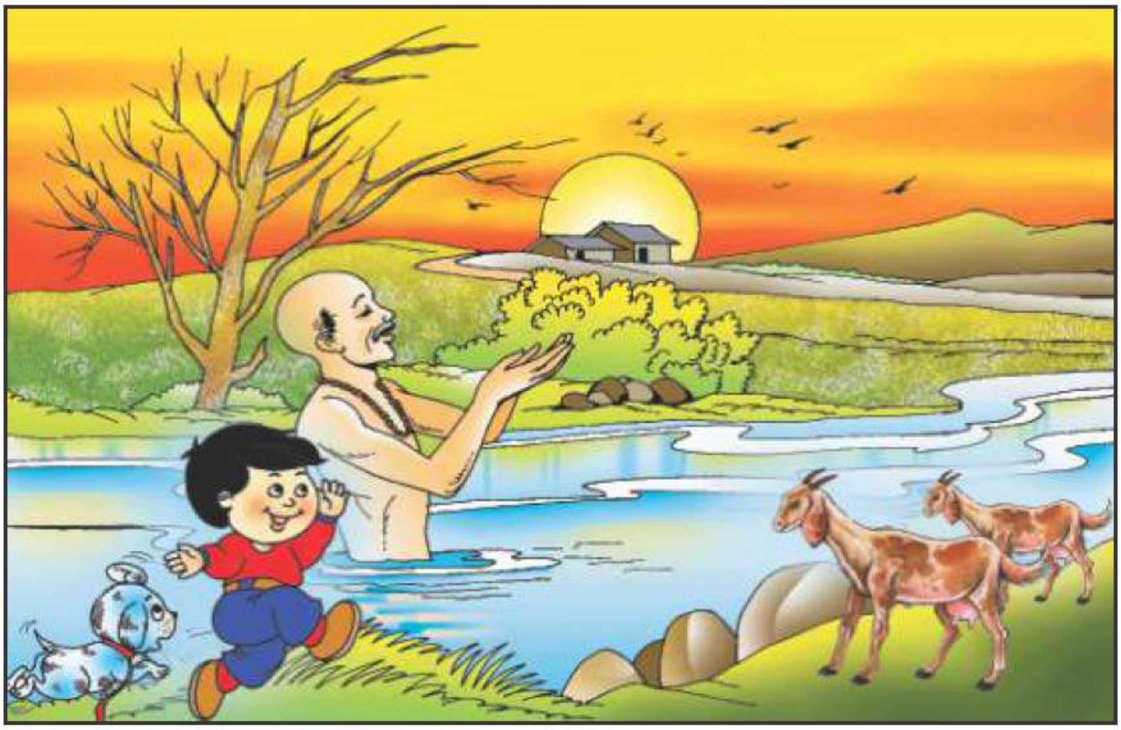

(१) ______

(२) ______

(३) ______

(४) ______

(५) ______

(६) ______

(७) ______

(८) ______

१४ मम्मी

– संकलित

परीलोक की कथा–कहानी
हँसकर मुझे सुनातीं मम्मी,
फूलों वाले, तितिली वाले
गाने मुझे सिखातीं मम्मी।

खीर बने या गरम पकौड़े
पहले मुझे खिलातीं मम्मी,
होमवर्क पूरा कर लूँ तो –
टॉफी–केक दिलातीं मम्मी।

काम अगर मैं रहूँ टालता
तब थोड़ा झल्लातीं मम्मी,
झटपट झूठ पकड़ लेती हैं
मन–ही–मन मुसकातीं मम्मी।

रूठूँ तो बस बात बनाकर
पल में मुझे मनातीं मम्मी,
बड़ा लाड़ला तू तो मेरा –
कहकर मुझे रिझातीं मम्मी।

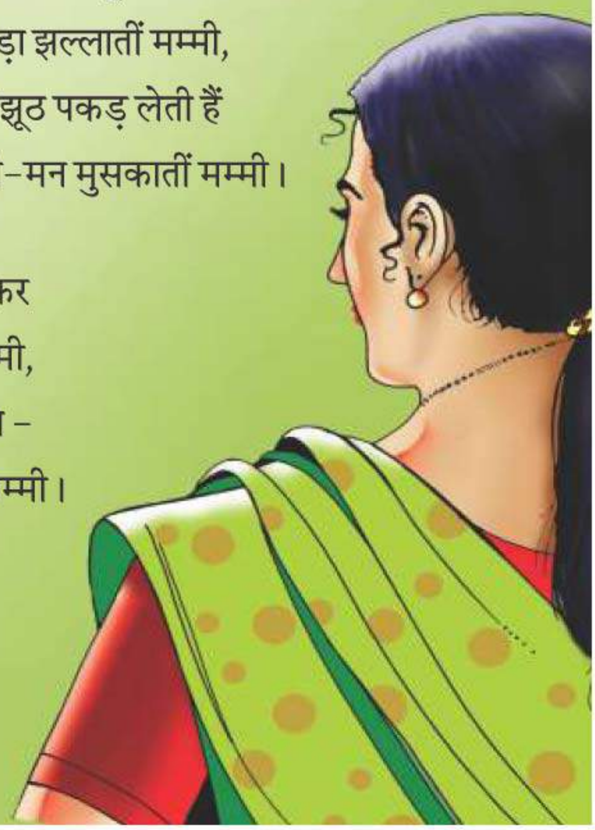

शब्दार्थ

परीलोक परीयों का देश **होमवर्क** घरकाम **टोफी** गोली **केक** एक वानगी **झल्लाना** गुस्सा होना **मुसकाना** मुस्कुराना **रिझाना** मनाना

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) माँ बच्चे को कौन-सी कहानी सुनाती है ?

(२) माँ बच्चे को कैसे गाने सिखाती है ?

(३) माँ उसे केक-टोफी कब देती है ?

(४) माँ बच्चे पर कब गुस्सा करती है ?

२. (अ) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : सुनाती - सुनाना

(१) सिखाती - ______ (२) खिलाती - ______

(३) दिलाती - ______ (४) झल्लाती - ______

(५) मुस्काती - ______ (६) मनाती - ______

(७) रिझाती - ______

(ब) समझकर लिखिए :

उदाहरण : हँसना × रोना

(१) झूठ × ______ (२) रुठना × ______

(३) पकड़ना × ______ (४) गरम × ______

(क) प्रत्येक शब्द का उपयोग करके वाक्य बनाइए :

(१) खीर : ____________________

(२) पकोड़े : ____________________

(३) टोफी : ____________________

(४) केक : ____________________

(५) होमवर्क : ____________________

स्वाध्याय

१. दो या तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) मम्मी बच्चे का होमवर्क कैसे पूरा करवाती हैं ?

(२) मम्मी बच्चे को कैसे मनातीं हैं ?

(३) मम्मी बच्चे को क्या-क्या सिखातीं हैं ?

(४) मम्मी बच्चे को क्या-क्या कहकर प्यार करती हैं ?

२. बताइए :

(१) आपकी मम्मी आपको क्या-क्या सिखाती हैं ?

____

____

(२) आपकी मम्मी द्वारा बनाया हुआ कौन-सा व्यंजन आपको बहुत पसंद है ?

____

____

(३) मम्मी के द्वारा सिखाई गई कोई दो बातें अपने शब्दों में लिखिए।

______

______

(४) आपकी मम्मी आपके साथ कौन-सा खेल खेलती हैं ?

______

______

३. (अ) योग्य विकल्प चुनकर लिखिए :

(१) प ______ लोक (डी, री,टी,)

(२) प ______ ड़े (कौ, को, की)

(३) ला ______ ला (र, द, ड़)

(४) होम ______ र्क (द, व, क)

(ब) 'म' अक्षर पर से दस शब्द बनाइए :

(१) मम्मी (२) ______

(३) ______ (४) ______

(५) ______ (६) ______

(७) ______ (८) ______

(९) ______ (१०) ______

(क) सूचना के अनुसार लिखिए :

(१) छः फूलों के नाम ।

(१) गुलाब (२) ______ (३) ______

(४) ______ (५) ______ (६) ______

(२) छः त्यौहारों के नाम ।

(१) ______ (२) ______ (३) ______

(४) ______ (५) ______ (६) ______

(३) छः देशी महीनों के नाम ।

(१) ______ (२) ______ (३) ______

(४) ______ (५) ______ (६) ______

(४) छः पक्षीयों के नाम ।

(१) ______ (२) ______ (३) ______

(४) ______ (५) ______ (६) ______

४. मम्मी विषय पर पाँच वाक्य लिखिए।

(१) ______

(२) ______

(३) ______

(४) ______

(५) ______

१५ प्यार भरा एक खत

– संकलित

प्यारी

बिटिया

खुश रहो

तुम्हें मेरा पत्र पढ़कर आश्चर्य तो अवश्य होगा कि इस बदलते हुए आधुनिक युग में जहाँ विज्ञान एक के बाद एक सफलता के शिखर सर करता जा रहा है, मैं तुम्हें टेलिफोन करने के बजाय पत्र लिख रहा हूँ। मैं तुम्हें एक बहुत ही रोचक बात बताना चाह रहा था। इसलिए मैंने सोचा कि टेलिफोन से की गई बात कुछ समय के पश्चात् भूलने की संभावना रहती है परंतु पत्र को तो बार-बार पढ़कर भी समझ सकते हैं।

पिछले हफ्ते मैं कर्नाटक गया था। वहाँ मैंने चंदन के वृक्ष देखे थे। इसी राज्यवृक्ष की बात मैं तुम्हें बताना चाह रहा था।

चंदन मध्यम आकार का और बहुत ही धीमी गति से बढ़नेवाला वृक्ष है। यह लगभग ३० वर्ष में पककर तैयार होता है। इसकी उम्र लगभग १२५ वर्ष की होती है। चंदन एक सदाबहार वृक्ष है। यह अपने आसपास के वृक्षों को पनपने नहीं देता है क्योंकि यह उनकी जड़ों से पोषण प्राप्त करता है।

चंदन की मुख्य विशेषता यह है कि केवल इसकी लकड़ी में ही सुगंध होती है। इसके फल, फूल, बीज आदि में सुगंध नहीं होती है।

चंदन के वृक्ष पर वर्ष में दो बार फूल खिलते हैं – एक जून से सितंबर के बीच और दूसरा नवंबर से फरवरी के बीच। इसके फूल छोटे छोटे गुच्छेवाले और गुलाबी रंग के होते हैं। इन पर बैंगनी रंग की आभा होती है। फूलों के बाद इसके वृक्ष पर फल भी वर्ष में दो बार आते हैं। ये फल छोटे-छोटे और गोलाकार में होते हैं। ये गूदेदार होते हैं। इनकी गुठलियां बहुत छोटी होती हैं। इन गुठलियों में से गाढ़े लाल रंग का तेल निकलता है।

चंदन एक बहुत ही उपयोगी वृक्ष है। इसकी लकड़ी और लकड़ी में से निकाला हुआ तेल अनेक कामों में उपयोगी है। चंदन के तेल से आर्युवैदिक औषधियाँ बनाई जाती हैं। इससे यूनानी दवाएँ भी तैयार की जाती हैं। साथ ही साथ हम इसका दैनिक जीवन में भी उपयोग करते हैं। गर्मियों के मौसम में चंदन के तेल की एक बूंद का दूध के साथ सेवन करने से लू का प्रकोप शांत हो जाता है। शरीर पर चंदन का तेल लगाने से या चंदन की लड़की को पानी में घिसकर उसका लेप लगाने से घमोरियों से राहत मिलती है। प्राय: चंदन से तैयार की गई औषधियों का दो प्रकार से प्रयोग किया जाता है – कुछ औषधियों का उपयोग लेप, मल्हम या पाउड़र के रूप में किया जाता है। एवं कुछ औषधियों का शहद, पानी, दूध आदि के साथ गोली, चटनी, शर्बत आदि के रूप में सेवन किया जाता है। चंदन की सहायता से सिरदर्द, फोड़े–फुन्सियां, नाक की फुन्शी, मुहासे या शरीर पर स्थित किसी भी घाव को ठीक करके त्वचा (चमड़ी) को कांतिमय बनाया जा सकता है।

चंदन का वृक्ष मुख्यरूप से कर्नाटक और इसके आसपास के क्षेत्रों में पाया जाता है। यह वृक्ष मूलरूप से पथरीले और पहाड़ी क्षेत्र में पाया जाता है। यह वृक्ष भारत के अन्य राज्यों में भी पाया जाता है परंतु दक्षिण भारत में पाए जानेवाले चंदन के वृक्षों की लकड़ी अधिक तेलवाली और सुगंधित होती है। चंदन की लगभग दस जातियाँ हैं – उनमें से सफेद चंदन सबसे अधिक उपयोगी माना जाता है। भारत में चार तरह के चंदन के वृक्ष पाए जाते हैं – सफेद चंदन, पीला चंदन, लाल चंदन और कुचंदन। विद्वानों का मानना है कि सफेद चंदन और पीला चंदन एक है तथा लाल चंदन और कुचंदन एक है।

चंदन के बारे में तुम खुद पढ़कर अपने मित्रों और छोटे भैया को भी बताना। हमारे आसपास पाई जानेवाली वनस्पतियाँ, पेड़–पौधे हमारे लिए कितने उपयोगी हैं यह तुम्हें समझ में आ गया होगा। इन गर्मियों में चंदन का दूध के साथ सेवन करना मत भूलना।

तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा पिता

अजयकुमार

शब्दार्थ

पत्र चिट्‌ठी **आश्चर्य** अचरज **आधुनिक** नया **रोचक** रुचिपूर्ण **पश्चात्** बाद **वृक्ष** पेड़ तरु **वर्ष** साल **बारहमासी** सदाबहार, हमेशां फूलने-फलनेवाला **सुगंध** महक **गुठली** फल का बीज **मौसम** ऋतु **औषधि** दबाई **हप्ता** सप्ताह **पनपना** बढ़ना, वृद्धि करना

मुहावरे

✳ शिखर सर करना – ऊचाईं पर पहुँचना, जीतना

अभ्यास

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) यह पत्र किसने किसको लिखा है ?

(२) चंदन का वृक्ष कितने वर्ष में पकता है ?

(३) चंदन के वृक्ष का कौन-सा भाग सुगंधित होता है ?

(४) चंदन के वृक्ष पर कितनी बार फूल खिलते हैं ?

२. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(१) चंदन ______ में पाया जाता है। (गुजरात, कर्नाटक)

(२) चंदन की ______ में सुगंध होती है। (फल, लकड़ी)

(३) चंदन के फल की गुठली ______ होती है। (बड़ी, छोटी)

(४) चंदन का फल ______ होता है। (गूदेदार, शुष्क)

३. समझकर लिखिए :

(१) उपयोगी × अनुपयोगी (२) सुगंध × ______

(३) बड़ा × ______ (४) धीमा × ______

(५) गूदेदार × ______

स्वाध्याय

१. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) चंदन का फल कैसा होता है ?

(२) चंदन का वृक्ष कहाँ पाया जाता है ?

(३) चंदन की लकड़ी में से क्या निकलता है ?
(४) चंदन के फूल किस रंग के होते हैं ?
(५) चंदन के कितने प्रकार हैं ?

२. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(१) चंदन के फल की गुठली की क्या विशेषता है ?
(२) लू से बचने हेतु चंदन किस प्रकार उपयोगी है ?
(३) चंदन से बनी औषधियों का उपयोग कैसे करते हैं ?
(४) चंदन की सहायता से कौन-कौन सी बीमारीयाँ दूर होती हैं ?
(५) भारत में चंदन के कितने प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं ? कौन-कौन से ?
(६) दक्षिण भारत में पाए जानेवाले चंदन की क्या विशेषता है ?

३. वाक्य पूर्ण कीजिए :

(१) शरीर पर चंदन का तेल लगाने से ....
(२) चंदन के तेल की एक बूंद दूध के साथ लेने से ....
(३) चंदन के फूल जून से सितंबर एवं ....
(४) चंदन की विशेषता है कि केवल इसकी लकड़ी ....

४. (अ) समझकर लिखिए :

(१) राष्ट्रीय फूल : कमल	(२) राष्ट्रीय फल : ______
(३) राष्ट्रीय वृक्ष : ______	(४) राष्ट्रीय धान्य : ______
(५) राष्ट्रीय पक्षी : ______	(६) राष्ट्रीय ध्वज : ______
(७) राष्ट्रीय गीत : ______	(८) राष्ट्रीय प्राणी : ______

(ब) उदाहरण के अनुसार लिखिए :

(१) मेरे मामा की चिट्ठी आई है। (पत्र)
= मेरे मामा का पत्र आया है।
(२) उसे पत्र देखकर आश्चर्य हुआ। (अचरज)
= ______________________________

(३) <u>बारहमासी</u> पौधे पर हमेंशा फूल रहते हैं। (सदाबहार)

= ________________________________

(४) चंदन हर <u>मौसम</u> में हराभरा रहता है। (ऋतु)

= ________________________________

(५) चंदन की लकड़ी में <u>महक</u> होती है । (सुगंध)

= ________________________________

(क) दिए गए पत्र के चित्र पर से उत्तर लिखिए :

प्रिय मित्र रुद्र .... आपका मित्र दीपक (गुजरात)	सेक्टर ७, २२३, सुसान लोक, नई दिल्ली

(१) यह पत्र किसने लिखा है ?

(२) यह पत्र किसको लिखा गया है ?

(३) यह पत्र कहाँ से भेजा गया है ?

(४) रूद्र कहाँ रहता है ?

१६ पहेलियाँ

– संकलित

सफेद खेत काला बीज,
बोनेवाला गाए गीत।

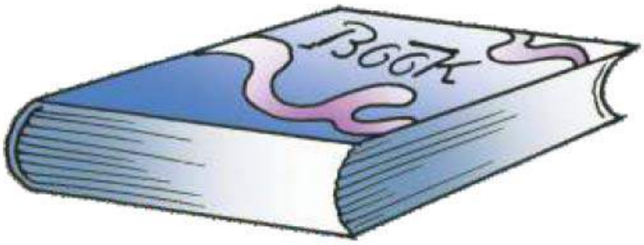

नहीं है सुन्दर रंग है काला,
यह पक्षी मीठी वाणी वाला।

एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा,
चारों तरफ थाल फिरे,
मोती उसका एक न गिरे।

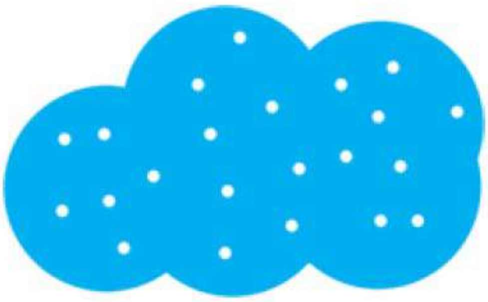

हरी थी, मन भरी थी,
लाख मोती जड़ी थी,
राजा जी के बाग में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।

गोल–गोल हैं जिसकी आँखे,
भाता नहीं उजाला,
दिन में सोता रहता हरदम,
रात विचरने वाला।

पानी से निकला एक पेड़,
पत्ते नहीं पर ड़ाल अनेक,
एक पेड़ की ठंड़ी छाया,
पर नीचे कोई बैठ न पाया।

सबसे वजनी होता हूँ मैं,
इस धरती पर औरों से,
सूंढ़ से पानी पीता हूँ मैं,
चिंघाड़ मारता जोरों से।

शब्दार्थ

वाणी बोली, आवाज **औंधा** उलटा **विचरना** घूमना **वजनी** वजनदार **चिंघाड़** हाथी के चिल्लाने की आवाज

अभ्यास

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) मीठी वाणी वाला पक्षी कौन–सा है ?

(२) थाल किसको कहा गया है ?

(३) तारों की तुलना किससे की गई है ?

(४) उल्लू की आँखे कैसी होती हैं ?

स्वाध्याय

१. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(१) रात में कौन-सा पक्षी जागता है ?

(२) दुशाला ओढ़े कौन खड़ी है ?

(३) फुआरे रूपी पेड़ को कैसा बताया है ?

(४) सूँढ़वाले प्राणी का नाम बताइए।

२. **सूचना के अनुसार लिखिए :**

(१) आपको कंठस्थ एक पहेली लिखिए।

(२) आपके द्वारा लिखी पहेली में से चार शब्द ढूँढ़कर उनके अलग-अलग चार वाक्य बनाइए।

३. समानार्थी शब्द लिखिए :

(१) पक्षी = ____________ (२) रात = ____________

(३) सिर = ____________ (४) पानी = ____________

(५) आकाश = ____________ (६) पेड़ = ____________

(७) बाग = ____________ (८) धरती = ____________

(९) आँख = ____________ (१०) हाथी = ____________

४. विरूद्धार्थी शब्द लिखिए :

(१) सुन्दर × ____________ (२) ठंडी × ____________

(३) काला × ____________ (४) छाँव × ____________

(५) मीठी × ____________ (६) नीचे × ____________

(७) उजाला × ____________ (८) एक × ____________

५. चित्र के आधार पर वर्णन लिखिए :

६. किन्हीं दस प्राणियों के नाम लिखिए :

७. अपने माता-पिता से पूछकर दो पहेलियाँ लिखिए :

(१)

(२)

१७ बुद्धि की सदा विजय

– ओम प्रकाश कश्यप

एक बकरी थी। एक उसका मेमना। दोनों जंगल में चर रहे थे। चरते–चरते बकरी को प्यास लगी। मेमने को भी प्यास लगी। बकरी बोली, 'चलो, पानी पी आएँ।' मेमने ने भी जोड़ा, 'हाँ माँ! चलो पानी पी आएँ।' पानी पीने के लिए बकरी नदी की ओर चल दी। मेमना भी पानी पीने के लिए नदी की ओर चल पड़ा।

दोनों चले। बोलते–बतियाते। हँसते–गाते। टब्बक–टब्बक। टब्क्क–टब्क्क। बातों–बातों में बकरी ने मेमने को बताया, 'साहस से काम लो तो संकट टल जाता है। धैर्य यदि बना रहे तो विपत्ति से बचाव का रास्ता निकल ही आता है।'

माँ की सीख मेमने ने गाँठ बाँध ली। दोनों नदी तट पर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर बकरी ने नदी को प्रणाम किया। मेमने ने भी नदी को प्रणाम किया। नदी ने दोनों का स्वागत कर उन्हें सूचना दी, 'भेड़िया आने ही वाला है। पानी पीकर फौरन घर की राह लो।'

'भेड़िया गंदा है। वह मुझ जैसे छोटे जीवों पर रौब झाड़ता है। उन्हें मारकर खा जाता है। वह घमंडी भी है। तुम उसे अपने पास क्यों आने देती हो। पानी पीने से मना क्यों नहीं कर देती।' मेमने ने नदी से कहा। नदी मुस्कुराई। बोली, 'मैं जानती हूँ कि भेड़िया गंदा है। अपने से छोटे जीवों को सताने की उसकी आदत मुझे जरा भी पसंद नहीं है। पर क्या करूँ। वह जब भी मेरे पास आता है, प्यासा होता है। प्यास बुझाना मेरा धर्म हैं। मैं उसे मना नहीं कर सकती।'

बकरी को बहुत जोर की प्यास लगी थी। मेमने को भी बहुत जोर की प्यास लगी थी। दोनों नदी पर झुके। नदी का पानी शीतल था। साथ में मीठा भी। बकरी ने खूब पानी पिया। मेमने ने भी खूब पानी पिया।

पानी पीकर बकरी ने डकार ली। पानी पीकर मेमने को भी डकार आई।

डकार से पेट हल्का हुआ तो दोनों फिर नदी पर झुक गए। पानी पीने लगे। नदी उनसे कुछ कहना चाहती थी। मगर दोनों को पानी पीते देख चुप रही। बकरी ने उठकर पानी पिया। मेमने ने भी उठकर पानी पिया। पानी पीकर बकरी मुड़ी तो उसे जोर का झटका लगा। लाल आँखों, राक्षसी डील-डौल वाला भेड़िया सामने खड़ा था। उसके शरीर का रक्त जम-सा गया।

मेमना भी भेड़िये को देख घबराया। थोड़ी देर तक दोनों को कुछ न सूझा।

अरे वाह ! आज तो ठंडे जल के साथ गरमागरम भोजन भी है। अच्छा हुआ जो तुम दोनों यहाँ मिल गए। बड़ी जोर की भूख लगी है। अब मैं तुम्हें खाकर पहले अपनी भूख मिटाऊँगा। पानी बाद में पिऊँगा।

तब तक बकरी संभल चुकी थी। मेमना भी संभल चुका था।

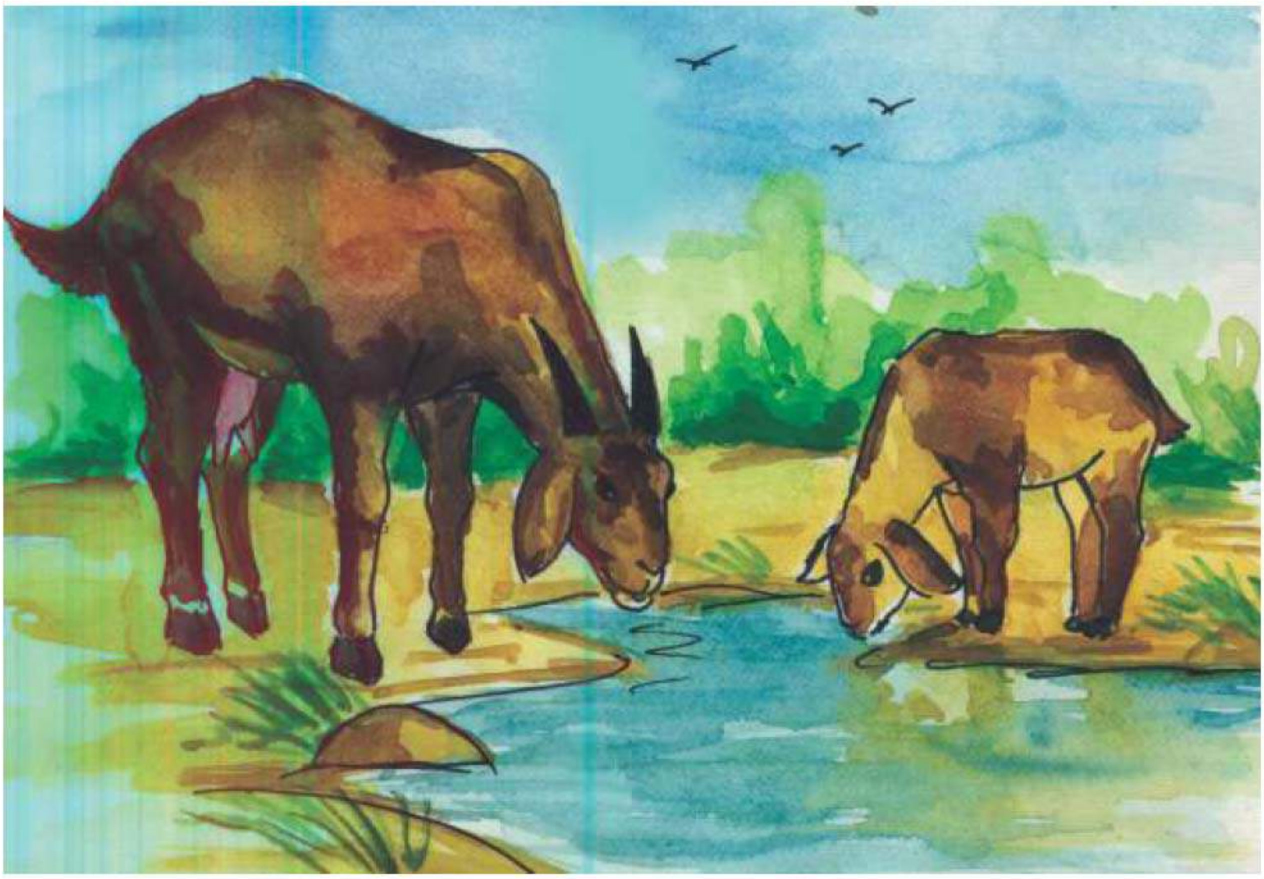

छि; छि; कितने गंदे हो तुम। मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। लगता है महीनों से मुँह नहीं धोया। मेमना बोला। भेड़िया सकपकाया। बगले झाँकने लगा।

'जाने दे बेटा। ये ठहरे जंगल के मंत्री। बड़ों की बड़ी बातें। हम उन्हें कैसे समझ सकते हैं। हो सकता है भेड़िया दादा ने मुँह न धोने के लिए कसम उठा रखी हो।' बकरी ने बात बढ़ाई।

'क्या बकती है। थोड़ी देर पहले ही तो रेत में रगड़कर मुँह साफ किया है।' भेड़िया गुर्राया।

'झूठे कहीं के। मुँह धोया होता तो क्या ऐसे ही दिखते। तनिक नदी में झाँक कर देखो। असलियत मालूम पड़ जाएगी।' हिम्मत बटोर कर मेमने ने कहा।

भेड़िया सोचने लगा। बकरी बड़ी है। उसका भरोसा नहीं। यह नन्हाँ मेमना भला क्या झूठ बोलेगा। रेत से रगड़ा था, हो भी सकता है वहीं पर गंदी मिट्टी से मुँह सन गया हो। ऐसे में इन्हें खाऊँगा तो नाहक गंदगी पेट में जाएगी। फिर नदी तक जाकर उसमें झाँककर देखने में भी कोई हर्जा नहीं है। ऐसा संभव नहीं कि मैं पानी में झाँकू और ये दोनों भाग जाएँ। ऊँह, भागकर जाएँगे भी कहाँ। एक झपट्टे में पकड़ लूँगा।

'देखो ! मैं मुँह धोने जा रहा हूँ। भागने की कोशिश मत करना। वरना बुरी मौत मारूँगा।' भेड़िया ने धमकी दी। बकरी हाथ जोड़कर कहने लगी, 'हमारा तो जन्म ही आप जैसों की भूख मिटाने के लिए हुआ है। हमारा शरीर जंगल के मंत्री की भूख मिटाने के काम आए। हमारे लिए इससे ज्यादा बड़ी बात भला और क्या हो सकती है। आप तसल्ली से मुँह धो लें। यहाँ से बीस कदम आगे नदी का पानी बिल्कुल साफ है। वहाँ जाकर मुँह धोएँ। विश्वास न हो तो मैं भी साथ में चलती हूँ।'

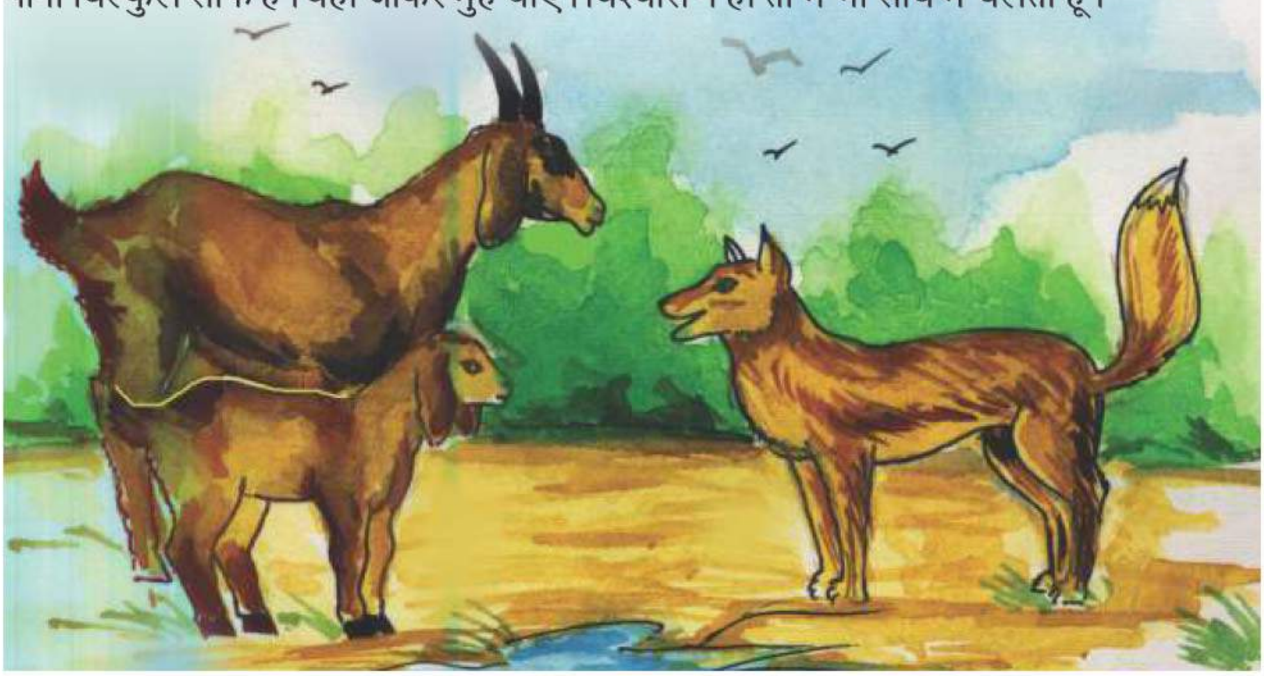

भेड़िये को बात भा गई। वह उस ओर बढ़ा जिधर बकरी ने इशारा किया था। वहाँ पर पानी काफी गहरा था। किनारे चिकने। जैसे ही भेड़िये ने अपना चेहरा देखने के लिए नदी में झाँका, पीछे से बकरी ने अपनी पूरी ताकत समेटकर जोर का धक्का दिया। भेड़िया अपने भारी भरकम शरीर को संभाल न पाया और 'धप' से नदी में जा गिरा। उसके गिरते ही बकरी ने वापस जंगल की दिशा में दौड़ना शुरू कर दिया। उसके पीछे मेमना भी था।

दोनों नदी से काफी दूर निकल आए। सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर बकरी रुकी। मेमना भी रुका। बकरी ने लाड़ से मेमने को देखा। मेमने ने विजेता के से दर्प के साथ अपनी माँ की आँखों में झाँका। दोनों के चेहरों से आत्मविश्वास झलक रहा था। बकरी बोली,

'कुछ समझे ?'

'हाँ समझा।'

'क्या ?'

'साहस से काम लो तो खतरा टल जाता है।'

'और ?'

'धैर्य यदि बना रहे तो विपत्ति से बचने का रास्ता निकल ही आता है।'

'शाबाश !' बकरी बोली। इसी के साथ वह हँसने लगी। माँ के साथ-साथ मेमना भी हँसने लगा ?

शब्दार्थ

साहस वीरता, निडरता **धैर्य** धीरज **विपत्ति** संकट, मुसीबत **गाँठ बाँधना** याद रखना **फौरन** तुरंत **रौब झाड़ना** प्रभाव डालना **डकार लेना** संतुष्ट होना **डील-डौल** बाह्य स्वरूप **तसल्ली** शांति **दर्प** तेज **आत्मविश्वास** अपने आप में विश्वास होना।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए :

(१) बकरी और मेमना क्या कर रहे थे ?

(२) प्यास लगने पर बकरी और मेमना कहाँ चल दिए ?

(३) नदी ने बकरी और मेमने से क्या कहा ?

(४) भेड़िये ने बकरी और मेमने को देखकर क्या सोचा ?

(५) मेमने ने भेड़िये से क्या कहा ?

२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :

(१) बकरी ने मेमने को क्या सीख दी ?

(२) बकरी और मेमने ने नदी को प्रणाम क्यों किया ?

(३) मेमने ने नदी से भेडिए की क्या शिकायत की ?

(४) नदी ने मेमने को क्या समझाया ?

(५) साहस और बुद्धि की विजय कैसे हुई ?

३. निम्नलिखित शब्दों को उदाहरण के आधार पर लिखिए :

(१) बकरी –	मेमना	(२) गाय –	________
(३) भैंस –	________	(४) कुत्ता –	________
(५) मक्खियाँ –	________		

४. बकरी और मेमने की कहानी पर चित्र बनाइए।

५. निम्नलिखित खाली जगहों को भरिए :

(१) भेड़िया गुर्राता है।

(२) कुत्ता ________ है।

(३) सिंह ________ है।

(४) हाथी ________ है।

६. बुद्धि और साहस से जुड़ी हुई कहानियाँ पढ़िए और सुनिए ।

स्वाध्याय

१. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(१) बकरी और मेमने का आपस में क्या संबंध है ?

(२) बकरी और मेमना नदी की ओर जाते वक्त क्या करते थे ?

(३) मेमने ने भेड़िये को गंदा क्यों कहा ?

(४) नदी आपको कैसी लगी ?

२. **प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्य में लिखिए :**

(१) 'साहस से काम लो तो संकट टल जाता है' इस वाक्य का क्या अर्थ है ?

(२) नदी भेड़िये को पानी क्यों पीने देती है।

(३) मेमना भेड़िये को चिढ़ाता क्यों है ?

(४) भेड़िए ने बकरी की बात क्यों मान ली ?

(५) कहानी के अंत में क्या हुआ ?

३. **निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत पहचानकर निशान लगाइए :**

(१) बकरी और मेमना शहर की ओर जा रहे थे । ☐

(२) भेड़िया मेमने को खा गया। ☐

(३) नदी ने बकरी को बहुत डराया। ☐

(४) नदी ने कहा 'प्यास बुझाना मेरा धर्म है।' ☐

(५) भेड़िए ने मेमने की बात का बहुत बुरा माना। ☐

(६) भेड़िया 'धप' से नदी में गिर गया। ☐

३. **'अ' से 'ब' के जोड़ मिलाइए :**

अ	ब
(१) भेड़िया	(१) बड़ों की बड़ी बातें।
(२) मेमना	(२) बड़ी जोर की भूख लगी है।
(३) बकरी	(३) मैं जानती हूँ भेड़िया गंदा है।
(४) नदी	(४) कितने गंदे हो तुम।
(५) मेमना	(५) मुँह धोया होता तो क्या ऐसे ही दिखते।

१८ देखकर चलो भाई

– संकलित

जैसा करोगे, वैसा भरोगे। इस नाटक में एक बालक
दूसरे को गिरा देता है। पढ़कर देखें फिर क्या हुआ !

पहला दृश्य

राघव : वह देखो ! आओ, तुम्हें एक तमाशा दिखाऊँ !

सुखमीत : क्या करोगे ? तुम गौरव को फिर से गिराने की सोच रहे हो ना !

राघव : हाँ ! उस दिन कितना मज़ा किया था हमने वह पास आ रहा है।

(भागकर जाता है। एक पत्थर उठाकर रास्ते के ठीक बीच में रख देता है।)

गौरव : (गाता हुआ)

बढ़े चलो, बढ़े चलो

राह है आसान

जल्दी ही पहुँच जाऊँगा

रुकना न मेरा........

(धड़ाम से गिर जाता है।)

राघव : (ताली बजाते हुए)

गिर गया ! गिर गया !

(गौरव उठने की कोशिश करता है।)

सभी बच्चे : (हँसते, ताली बजाते हुए) उठ भाई, उठ !

दिखता नहीं तो सड़क पर क्यों चलते हो ?

सुखमीत : शर्म आनी चाहिए तुम्हें। एक तो उसे गिरा दिया, दूसरे हँसी उड़ा रहे हो। राघव, मैं तुम्हारी माँ को बताऊँगा – चलो गौरव, तुम्हें घर छोड़ दूँ। तुम्हें चोट लगी है। कुछ दवा

लगानी होगी। लो, छड़ी पकड़ लो, और मेरा हाथ भी। (जाते हैं।)

बच्चे : (उधर देखते हुए) गए ! चलो, खेलें ! (खेलते हैं।)

वैभव : अरे ! उधर आसमान को तो देखो, कैसा लाल-काला दिखाई दे रहा है।

जीवन : लगता है, बादल आ रहे हैं।

असलम : नहीं-नहीं ! यह काली आँधी है। भागो, घर भागो।
(भागते हैं। तेज़ हवा का झोंका और फिर आँधी आ जाती है।)

राघव : मेरा घर दूर है। मैं कैसे पहुँचूँगा ! (दौड़ते हुए) ओह ! ओह ! यह क्या ? अरे, मेरी आँखों में कितनी मिट्टी घुस गई है ! कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा।

गौरव और सुखमीत : (दरवाज़े पर खड़े हैं।) राघव ! बहुत तेज़ आँधी आ रही है। इधर आ जाओ।

राघव : नहीं, मैं घर जा रहा हूँ।

गौरव : देखकर चलो भाई ! रुको, रुको ! मैं उठाता हूँ। हाँ, हाँ, कहाँ जा रहे थे ? ऐसे, अब खड़े हो जाओ। कहीं चोट तो नहीं लगी ?

राघव : तुमसे क्षमा माँगने ! आज मेरी आँखों पर पट्टी बँधी है। आज मुझे पता चला... जाने दो। बस कह दो, क्षमा कर दिया।

गौरव : मैं सुखमीत को बाहर तक छोड़ने आया था कि तुम्हारी आवाज़ सुनी। तुम तो मेरे मित्र हो, क्षमा कैसी। मैं अपनी धुन में गाता हुआ जा रहा था। पत्थर का पता ही नहीं चला। गिर गया। तुम्हारा कोई दोष नहीं। हम दोनों मित्र हैं।

राघव : (धीमे स्वर में) हाँ मित्र हैं। अब हम मित्र ही रहेंगे। मैं तुम्हें कभी तंग नहीं करूँगा।

शब्दार्थ

तमाशा मनोरंजक दृश्य **सोच** विचार **आसान** सहज **कोशिश** प्रयत्न **शर्म** लज्जा **चोट** आघात, जख्म **छड़ी** पतली लकड़ी **आँधी** धूल लिए तेज हवा

अभ्यास

१. पढ़िए और समझिए :

दिन	×	रात	पास	×	दूर
चलना	×	रुकना	हँसना	×	रोना
मित्र	×	शत्रु			

ऊपर दिए गए प्रत्येक जोड़ के शब्द एक-दूसरे से विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं। इसलिए ये विरोधार्थी शब्द हैं।

२. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए :

(१) 'देखकर चलो भाई' नाटक से क्या सीख मिलती है ?

(२) राघव कैसा लड़का है ?

(३) रास्ते में पत्थर कौन रख देता है ?

(४) सुखमीत गौरव को कहाँ छोड़ आया ?

स्वाध्याय

१. दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(१) राघव क्या सोच रहा था ?

(२) गौरव को गिरे हुए देखकर सभी बच्चों ने क्या किया ?

(३) सुखमीत ने गौरव की सहायता कैसे की ?

(४) राघव ने गौरव से क्षमा माँगते हुए क्या कहा ?

२. **सही वाक्य पर ✓ तथा गलत वाक्य पर ✗ का निशान लगाओ :**

(१) राघव सुखमीत को तमाशा दिखाना चाहता है। ☐

(२) गौरव के गिरने पर बच्चे रोने लगे। ☐

(३) राघव ने सुखमीत से क्षमा माँगी। ☐

(४) असलम ने कहा यह काली आँधी है। ☐

३. **समान अर्थवाले शब्दों का सही मिलान करो :**

पास	–	प्रयत्न
राह	–	लज्जा
कोशिश	–	रास्ता
शर्म	–	माता
माँ	–	नजदीक

४. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों की मदद से खाली स्थान भरो :**

(१) तुम्हें एक ______ दिखाऊँ। (तमाशा, पतंग)

(२) उस दिन कितना ______ किया था हमने। (मज़ा, काम)

(३) दिखता नहीं तो ______ पर क्यों चलते हो ? (पट्टी, सड़क)

(४) राघव ! बहुत तेज ______ आ रही है। (आँधी, बारिश)

५. **दिए गए प्रश्न के उत्तर में सही (✓) का निशान लगाओ :**

क. राघव किसे गिराना चाहता था ?

सुखमीत ☐ गौरव ☐ असलम ☐

ख. 'मैं तुम्हें कभी तंग नहीं करूँगा।' यह वाक्य कौन बोलता है ?

राघव ☐ सुखमीत ☐ गौरव ☐

६. **इन शब्दों का प्रयोग करके छोटे-छोटे वाक्य बनाओ :**

(१) आसान : ______

(२) शर्म : ______

(३) आँधी : ______

(४) क्षमा : ______

पुनरावर्तन ४

१. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(१) मम्मी टॉफी कब दिलाती है ?

(२) चंदन के वृक्ष का कौन-सा भाग सुगंधित होता है ?

(३) काला बीज किसे कहा गया है ?

(४) दिन में कौन सोता है ?

२. मुझे पहचानिए :

(१) मेरी आवाज बहुत मीठी है। - ______

(२) मुझे उजाला अच्छा नहीं लगता है। - ______

(३) मैं जोर से चिंघाड़ता हूँ। - ______

(४) मुझे सभी पढ़ते हैं। - ______

३. दिए गए कथन कौन-किससे कहता है ? बताइए :

(१) माँ ! चलो पानी पी आएँ। ______

(२) साहस से काम लो तो संकट टल जाता है। ______

(३) अच्छा हुआ जो तुम दोनों यहाँ मिल गए। ______

(४) आओ, तुम्हें एक तमाशा दिखाऊँ। ______

(५) मित्र, मैं तुम्हें कभी तंग नहीं करूँगा। ______

४. (अ) समान अर्थवाले शब्द लिखिए :

(१) शर्म - ______, ______

(२) विपत्ति - ______, ______

(३) साहस - ______, ______

(४) पत्र - ______, ______

(ब) समझकर लिखिए :

उदाहरण: बकरी – मेमना

(१) गाय – ________ (२) भेंस – ________

(३) कुत्ता – ________ (४) घोड़ा – ________

(५) हाथी – ________

५. (अ) काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(१) हरी थी ________

____

____

________ खडी थी।

(२) काम ________

____

____

________ मुसकातीं मम्मी।

(ब) विरूद्धार्थी शब्द लिखिए :

उदाहरण : झूठ × सच

(१) हँसना × ________ (२) गिरना × ________

(३) सुगंध × ________ (४) रूठना × ________

(५) ठंड़ी × ________ (६) भारी × ________

(७) सोना × ________ (८) चलना × ________

(क) दिए गए विषयों पर पाँच-सात वाक्य लिखिए :

(१) मेरा प्रिय वृक्ष - चंदन :

(१) ____________________

(२) ____________________

(३) ____________________

(४) ____________________

(५) ____________________

(६) ____________________

(७) ____________________

(८) ____________________

(२) मम्मी :

(१) ____________________

(२) ____________________

(३) ____________________

(४) ____________________

(५) ____________________

(६) ____________________

(७) ____________________

(८) ____________________

(३) हाथी :

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(७)

(८)

(४) वर्षाऋतु :

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(७)

(८)

१ बादल

- प्रकाश मनु

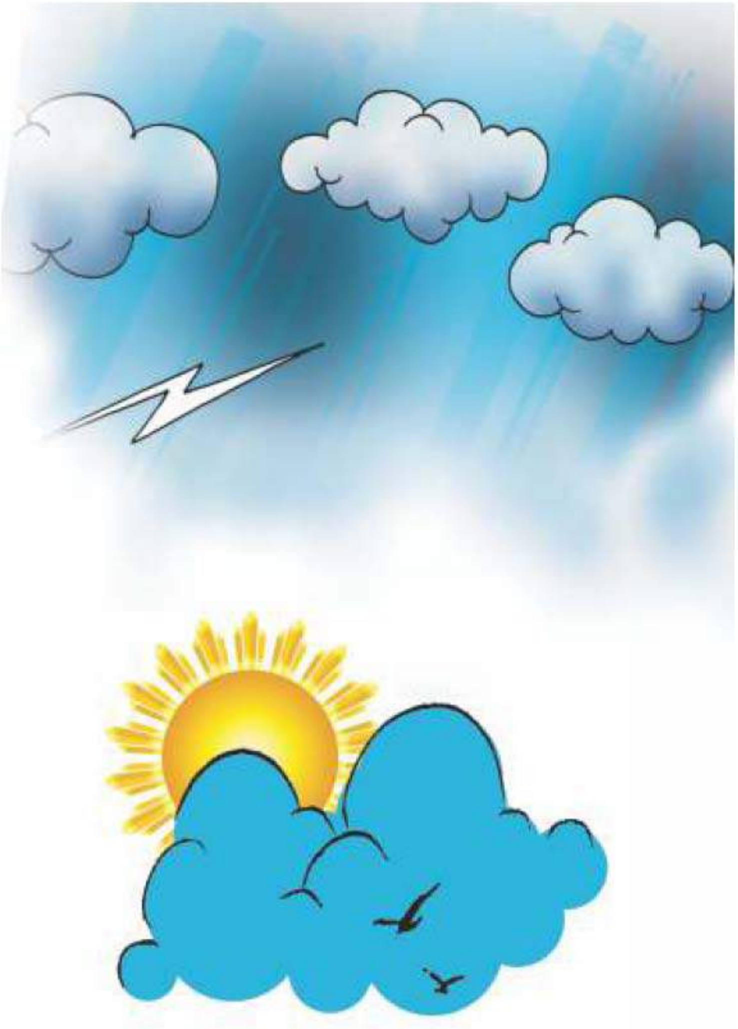

एक दिन नन्हा-सा एक बादल
आया मेरी छत पर,
बादल था वह चांदी जैसा
सुंदर, बेहद सुंदर।
आकर बोला बादल मुझसे
मेरे दोस्त बनोगे,
मै तो हूँ सैलानी पक्का
मेरे साथ चलोगे ?
मैं बोला, हां, चलो-चलो जी
मैं भी साथ चलूंगा,
साथ निभाओगे तो मैं भी
सच्चा दोस्त बनूंगा।
बादल ने तब मुझे बैठाया
और उड़ा वह चंचल,
बादल के संग उड़ते-उड़ते
देखी दुनिया पल-पल।
बड़े अजूबे देखे जग के
दुनिया नई निराली
ऊँचे पर्वत, सुंदर नदियां
घाटी फूलों वाली।

सारी दुनिया मुझे घुमाकर
लाया फिर वह घर में,
बोलो, अब तो खुश हो कु-कू।
बोला मीठे सुर में।
देख रहा था, कितना प्यारा
है यह नन्हा बादल,
मगर तभी जलधारा बनकर
बरस पड़ा वह छल-छल।
भीगी दुनिया, बाग-बगीचे
भीगा तन-मन सारा,
आह! बादल है या कोई
प्यारा-सा फव्वार !
अचरज में था डूबा तब मैं
चुप-चुप सोच रहा था,
यह नन्हा बादल भी तो है
नन्हे जादूगर-सा।
पर इतने में ढेर-ढेर-सी
मस्ती खूब लुटाकर,
बाय-बाय कर घुला हवा में
नन्हा-सा वह बादल।

शब्दार्थ

सैलानी सैर करनेवाला, घूमने-फिरनेवाला **अजूबे** आश्चर्यजनक **चंचल** नटखट, शरारती **दुनिया** संसार, जग **जलधारा** जलप्रवाह **अचरज** आश्चर्य

२ बेवक्त का राग

- संकलित

रामू धोबी के पास एक गधा था। दिन भर वह उससे खूब काम लेता, शाम को खुला छोड़ देता ताकि वह जंगल में तथा खेतों में जाकर हरी-हरी घास खाकर अपना पेट भर सके।

गधा शाम के समय आजादी से खाता-पीता और घूमता। वह बेचारा इस क्षेत्र में अकेला ही था, कोई संगी-साथी भी नहीं था, जिससे बात कर लेता। कभी-कभी उसके मन से आवाज उठती, 'काश ! अपना भी कोई दोस्त होता।'

अचानक एक दिन जंगल से एक गीदड़ निकलकर इन खेतों की ओर चला आया। उसने सामने ही एक गधे को घास चरते देखा तो मन में बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह भी अकेला घूमते-घूमते तंग आ गया था। उसे भी एक मित्र की तलाश थी।

गीदड़ ने आगे बढ़कर उस गधे से कहा, ''बड़े भाई, प्रणाम।''

''प्रणाम।'' गधे ने उस गीदड़ की ओर बड़े ध्यान से देखा और सोच में पड़ गया कि मुझ जैसे बदनसीब को प्रणाम करने वाला कौन हो सकता है।

''बड़े भैया, क्या सोच रहे हो, क्या हमारे साथ दोस्ती नहीं करोगे ?''

''क्यों नहीं... क्यों नहीं... भैया, मैं तो आज बहुत ही खुश हूँ कि इस क्षेत्र में मुझे राम-राम कहने वाला तो कोई मिला, नहीं तो अपना हाल यह था कि इस घास और खेती से ही राम-राम कर लेते थे।''

गधे की बात सुनकर गीदड़ को हंसी आ गई, उसे हंसता देखकर गधा भी हंसने लगा.... बस यहीं से उनकी मित्रता शुरू हो गई थी।

दूसरे दिन दोनों मित्र फिर वहीं मिले तो उस समय गधा घास खा रहा था, गीदड़ ने अपने मित्र से कहा, ''बड़े भैया ! यह क्या तुम हर रोज घास ही खाते रहते हो ?''

''भाई, अपने को पेट ही तो भरना है। यह घास ही तो अपना साथी है।''

''भाई, तुम मेरे मित्र हो, आज मैं तुम्हें बढ़िया खाना खिलाऊँगा। देखो, कुछ ही दूर एक खेत में बढ़िया खरबूजे हैं, उन खरबूजों को खाकर हम दोनों भाई आनन्द लेंगे।''

''खरबूजे... अहा... !'' गधे के मुंह में पानी भर आया।

गधा उसी समय अपने दोस्त गीदड़ के साथ खरबूजों के खेत में चला गया, दोनों मित्रों ने बड़े आनन्द से खरबूजे खाए। साथ-साथ बातें भी करते रहे।

गधा कुछ अधिक ही खुश हो गया था, वैसे भी प्राणी की यह आदत है कि वह खुश होकर खूब नाचता है, झूमता है। कभी-कभी गाने भी लग जाता है, यही हाल उस गधे का हुआ। जब उसका पेट अधिक भर गया तो वह भी नाचता हुआ गाना गाने लगा।

गीदड़ ने गधे की ढेंचू-ढेंचू की आवाजें सुनीं तो उससे बोला, "भैया, इस तरह शोर न करो, खेत का मालिक आ गया तो अनर्थ हो जाएगा।"

"भाई मैं शोर नहीं कर रहा, राग गा रहा हूँ, राग... तुम जंगल के रहने वाले लोग राग विद्या को क्या जानो, गीत तो जीवन का अंग है।" कहकर गधे ने फिर गाना शुरू कर दिया।

"देखो भाई, यदि तुम अपनी जिद पर अड़े रहोगे, तो मैं खेत से बाहर किनारे पर खड़ा इसे सुनता रहूँगा। इस गाने के लिए मैं अपनी जान को खतरे में नहीं डाल सकता।" यह कहते हुए गीदड़ उस खेत से बाहर जाकर खड़ा हो गया।

परंतु गधा तो अपनी धुन में मस्त था।

उसकी बेसुरी आवाज सुनकर खेत के मालिक की आंख खुल गई। बाहर आकर उसने देखा गधा उसके खेत में घुस आया है और पके हुए खरबूजों को खाकर खेत को भी उजाड़ दिया है।

उसने लाठी उठाई और उस गधे पर लट्ठ बरसाने शुरू कर दिए... गधा जान बचाकर भागा, उसके शरीर के कई स्थानों से खून बहने लगा।

रास्ते में खड़े गीदड़ ने उससे कहा, "क्यों भैया ! आया गाने का आनन्द ?"

गधा बेचारा क्या उत्तर देता। वह तो दर्द के मारे हाय-हाय कर रहा था।

शब्दार्थ

आजादी स्वतंत्रता, स्वाधीनता **अचानक** यकायक **तलाश** खोज, चाह **बदनसीब** बदकिस्मत **आनन्द** उल्लास, खुशी, हर्ष **शोर** हल्ला, चीखना-चिल्लाना **अनर्थ** अनिष्ट **जिद** हठ, दुराग्रह

*

३ हम भारत की शान

- संकलित

नन्हे-नन्हे हमें न समझो
हम भारत की शान हैं।
हमसे ही है धरती सारी
फैला यह आसमान है।
फूल हैं हम इस बगिया के
खुशबू फैलाना काम है
बढ़-चढ़कर आगे जाएँगे
करते काम महान हैं।
ऊँचे ही उठते जाना है
आगे ही बढ़ते जाना है
बढ़े चलेंगे, नहीं रुकेंगे
हम भारत की शान हैं।

शब्दार्थ

शान गर्व, ठाठ-बाट **धरती** पृथ्वी **आसमान** आकाश **फूल** पुष्प, सुमन, कुसुम **बगिया** बाग, बगिचा **महान** बहुत बडा विशाल

४ रवीन्द्रनाथ की कलम से

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक बहुत बड़े लेखक थे। उन्हें आज़ादी से बहुत प्यार था। बचपन में उन्होंने कैसे पिंजरे से पक्षियों को आज़ाद कर दिया, इस कहानी को पढ़कर देखो...

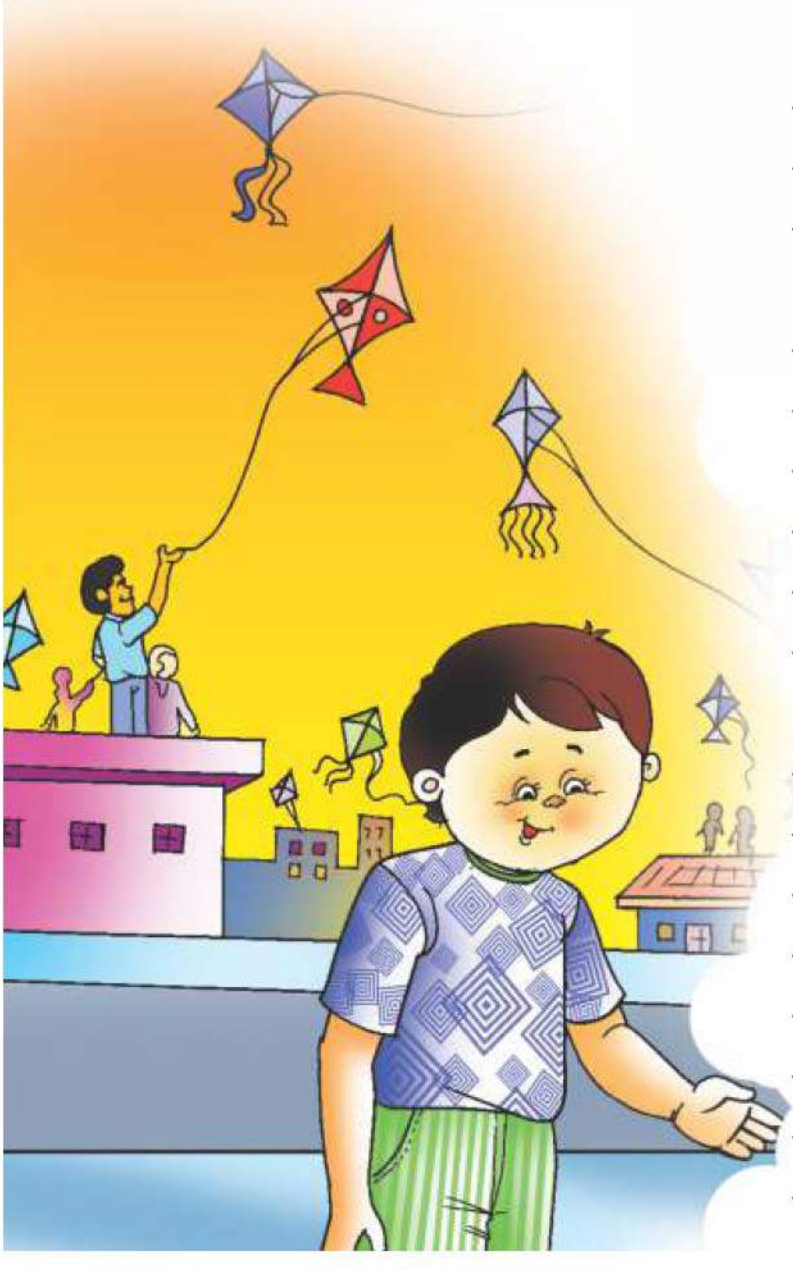

हमारा घर बहुत बड़ा था। आस-पास के घर भी बड़े-बड़े थे। कई घरों की छतें एक-दूसरे से सटी हुई थीं। मोहल्ले के लड़के वहाँ पतंग उड़ाते।

रंग-बिरंगी पतंगें उड़ती हुई बहुत अच्छी लगतीं। पतंगों के साथ-साथ उड़ते पक्षी मुझे बहुत भाते। कई बार तो डार की डार उड़ती दिखाई देती। ऐसा लगता मानो पक्षी हमारी पतंगों के साथ होड़ लगा रहे हों कि कौन ऊँचा उड़ता है।

उन दिनों लोगों को घरों में पक्षी पालने का बहुत शौक था। हर घर के बरामदे में कई-कई पिंजरे लटके रहते। रंग-बिरंगी चिड़ियाँ बंद पिंजरों में चीखती-चिल्लाती, पंख फड़फड़ाती रहतीं। उनकी आवाज़ों से मेरा मन दुखी हो जाता। मुझे विस्तृत नीले आकाश में उड़ते हुए पक्षी ही अच्छे लगते थे।

मेरी मंझली भाभी को भी अपनी सहेलियों की देखा-देखी चिड़ियाँ पालने का शौक हुआ। वे कई दिनों से कुछ पक्षी लाने की बात कर रही थीं।

मेरे कानों में भी भनक पड़ी। मैंने भाभी से विनती की, वे पक्षियों को न लाएँ। पिंजरे में कैद पक्षी अच्छे नहीं लगते।

मैं उन दिनों आठ-नौ वर्ष का बालक ही था। मेरी बात कौन सुनता !

भाभी चार रंग-बिरंगी चिड़ियाँ और एक नया पिंजरा ले आईं। पिंजरे में बैठा पक्षियों का जोड़ा चिल्ला रहा था। भाभी हँस-हँसकर पड़ोस की औरतों को रंग-बिरंगी चिड़ियाँ दिखा रही थीं। वे भी हँस-हँसकर उन छोटी चिड़ियों की प्रशंसा कर रही थीं। ''वाह ! कितनी सुंदर चिड़ियाँ हैं !'' सभी खुश थे, बस मैं ही उदास था।

मैंने भाभी से कहा, आप इन पक्षियों पर अत्याचार कर रही हैं। इन प्राणियों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो इन्हें कैद कर पिंजरे में डाल दिया है ?

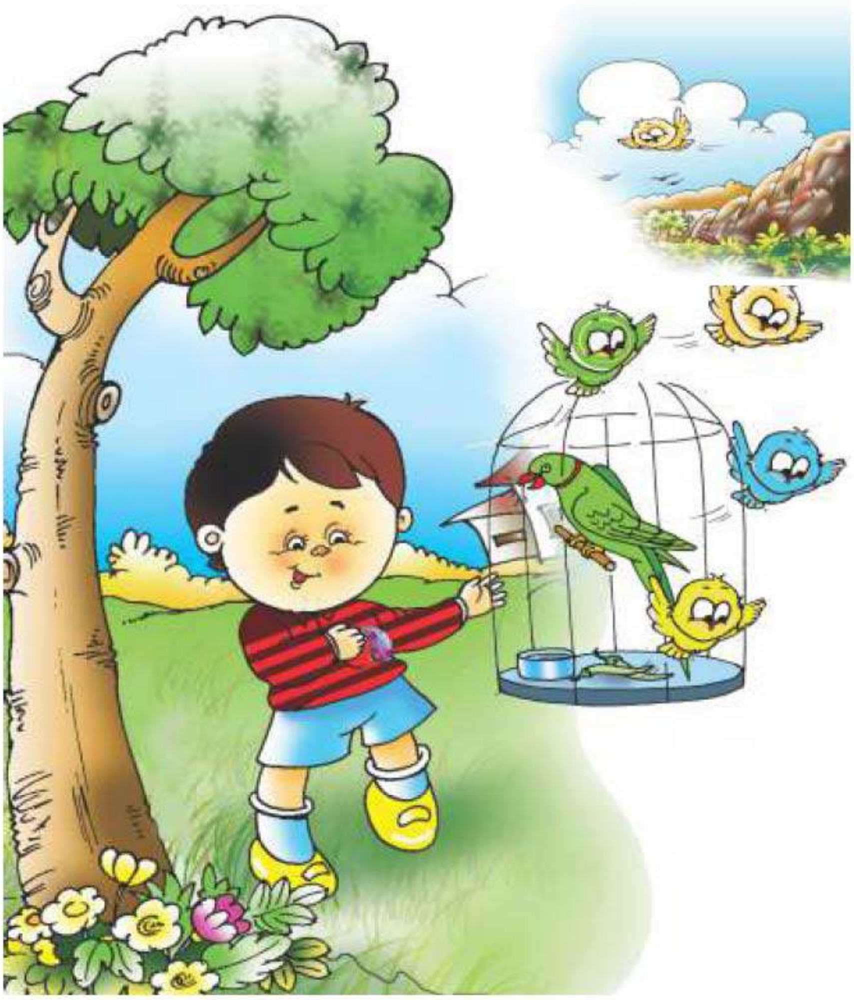

भाभी ने मुझे डाँटते हुए कहा, छोटे मुँह बड़ी बात। अपनी उम्र तो देखो ! आया है मुझे सिखानेवाला। जाओ, छत पर तुम्हारे मित्र पतंग उड़ा रहे हैं। तुम भी उड़ाओ।

मैं रुआँसा हो गया। सोचने लगा कि कैसे इन पक्षियों को स्वतंत्र करूँ। एक दिन मुझे अवसर मिल गया। भाभी अपनी सखियों के साथ फिल्म देखने गईं। मैं उनके कमरे से होकर बरामदे में गया। पिंजरे का दरवाज़ा खोला। पक्षी सहम गए। मैंने उन्हें पकड़ा और बरामदे से बाहर उड़ा दिया।

भाभी घर आईं तो पिंजरा खाली देख बहुत झल्लाई। खुद तो क्रोध किया ही, परिवार के अन्य लोगों से भी मेरी शिकायत की। सबको मेरा यह काम अनुचित लगा। सबने मुझे डाँटा। मैं चुपचाप सुनता रहा क्योंकि मुझे पक्षियों को आज़ाद कर बहुत खुशी हुई थी। काश मैं उन पक्षियों को भी निकाल पाता जो अन्य लोगों के घरों के बरामदों में लटके पिंजरों में बंद थे।

शब्दार्थ

होड प्रतिस्पर्धा, शर्त, बाजी **शौक** मनपसंद, रुचि **विस्तृत** विस्तारवाला **कैद** कारावास, बंधन **प्रशंसा** तारीफ, बडाई **उदास** दु:खी, खिन्न, विरक्त **अत्याचार** दुराचार, जुल्म **अवसर** मौका **सहम** डर, भय **शिकायत** फरियाद, उलाहना **अनुचित** गलत, बुरा

*